चाणक्य और दैनिक जीवन में सफलता

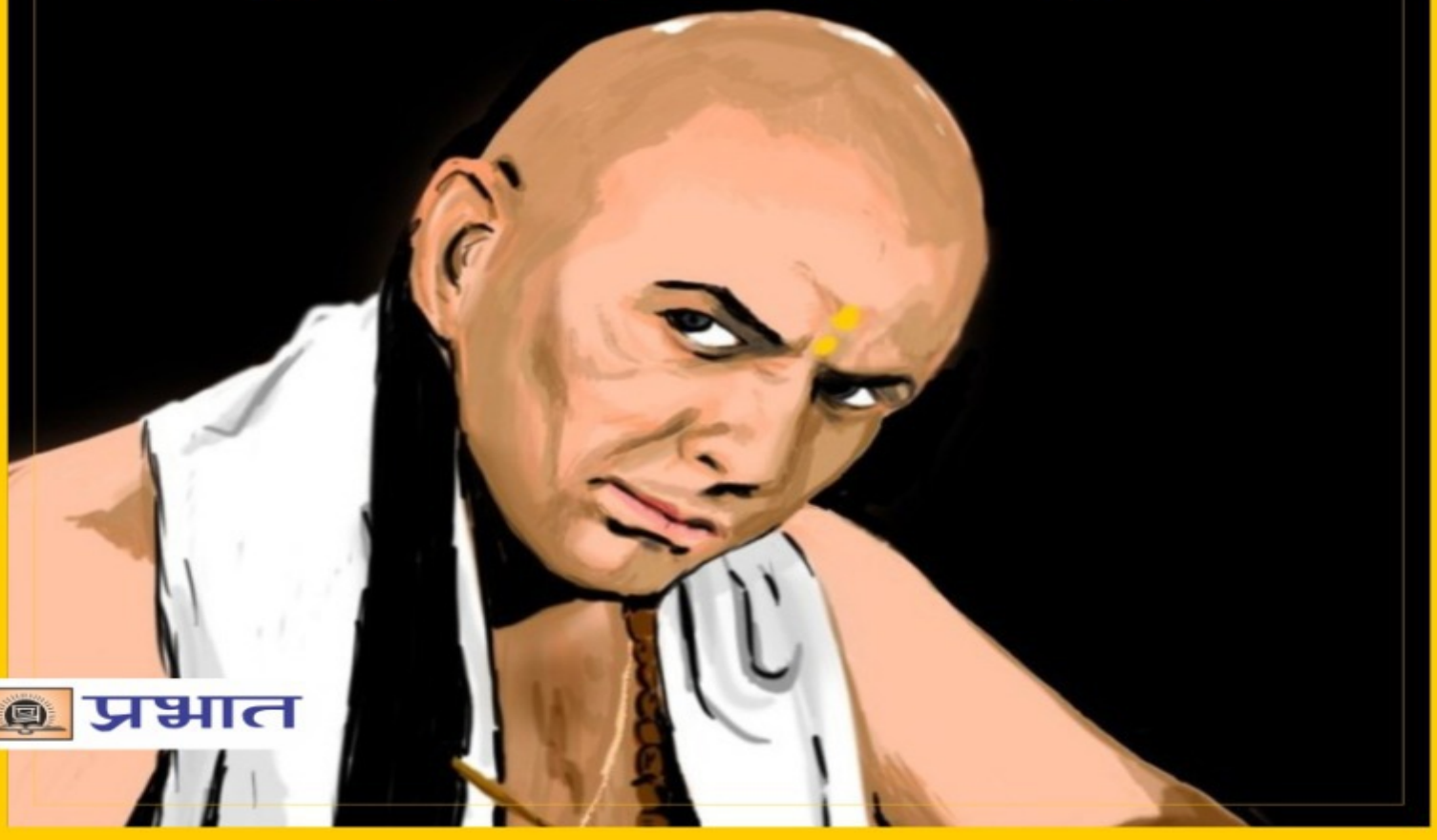

प्रभात

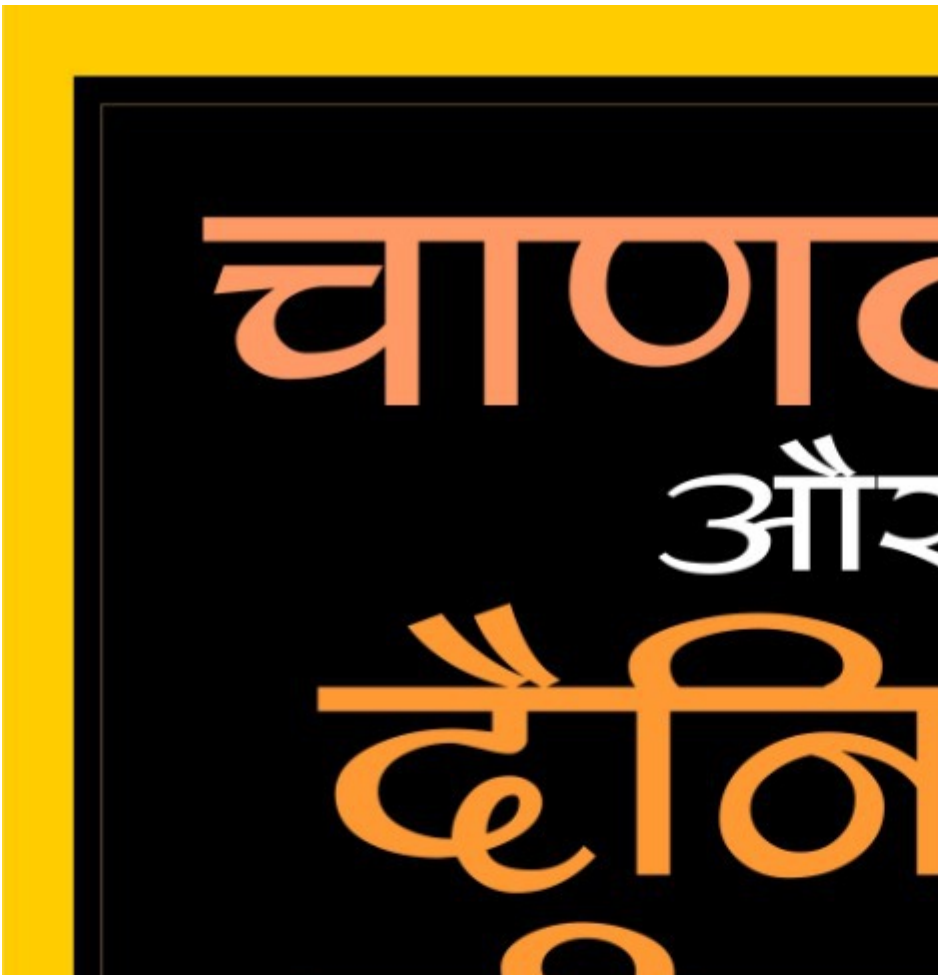
चाण
औ
दैनि

चाणक्य और दैनिक

जीवन में सफलता

रेनू सैनी

प्रभात प्रकाशन
ISO 9001:2015 प्रकाशक

आमुख

न्यूटन ने कहा था कि प्रकृति की किताब गणित की भाषा में लिखी गई है। गणित एक ऐसा विषय है, जो मुख्यतः समीकरणों, फॉर्मूलों और चिन्हों चिह्नों पर आधारित होता है। जो व्यक्ति गणित के इन समीकरणों, फॉर्मूलों और चिह्नों को अपने ज्ञान और बुद्धिमत्ता से समझ लेते हैं, उन्हें गणित सरल लगने लगता है। वहीं जो व्यक्ति समीकरणों और चिह्नों को सही तरह से नहीं समझ पाते हैं, उनके लिए गणित विषय बेहद क्लिष्ट और बोझिल हो जाता है। जीवन के साथ भी ऐसा ही होता है। जीवन चुनौतियों का नाम है। कुछ लोग चुनौतियों को अवसर के रूप में देखते हैं तो कुछ कठिनाइयों के रूप में। एक ही शब्द 'चुनौतियाँ' लोगों की बुद्धि के अनुरूप उनके सामने अलग-अलग अर्थ उत्पन्न कर देता है।

चुनौती को अवसर माननेवाले लोग कर्म की ओर प्रवृत्त हो जाते हैं तो उन्हें समस्याएँ माननेवालों का दृष्टिकोण भाग्य की ओर मुड़ जाता है। बस यहीं से प्रारंभ हो जाती है—कर्म और भाग्य को लेकर खींचतान। जो लोग चुनौती को अवसर मानकर हर बाधा को स्वर्णिम उपहार में परिवर्तित कर देते हैं, वे कभी भाग्य को मानने को तैयार नहीं होते, वहीं चुनौतियों को समस्याओं के रूप में देखने वाले लोग भाग्य से इतर कर्म की ओर आने को तैयार नहीं होते। बस इसी खेल में कर्म और भाग्य को बुना जाता रहता है। असफल होनेवाले लोग भाग्य की बुनाई को जितना भी बुनते जाएँ, लेकिन पूर्ण वह तभी होगी, जब उसे कोई आकार दिया जाएगा। आकार सदैव कर्म करके ही दिया जा सकता है। अगर सलाइयों और ऊन से बुनाई की जाती रहे, तो वह तब तक पूरी नहीं होगी, जब तक उसको मनोवांछित आकार नहीं दिया जाता।

चाणक्य ने अपने महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'अर्थशास्त्र' एवं नीतियों के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति को यही बताने का प्रयास किया है कि युद्ध हो या गृहस्थ जीवन, विद्यार्थी जीवन हो अथवा राजा का जीवन, सामान्य नागरिक का जीवन हो अथवा सैनिक का जीवन, प्रत्येक के लिए चपलता, चतुरता, शिक्षा, सद्व्यवहार अनिवार्य है। शिक्षित और बुद्धिमान व्यक्ति असंभव को संभव कर देता है, वह प्रतिकूल समय को भी अपने अनुकूल कर लेता है। कहते हैं कि समय चीजों को बदल देता है, लेकिन चाणक्य ने बुद्धिमान, विद्वान्, विनम्र और शिक्षित लोगों के संदर्भ में कहा है कि ऐसा व्यक्ति खुद को बदलकर समय को बदल देता है और पुराने कीर्तिमान ध्वस्त करके नए कीर्तिमान प्रतिस्थापित करता है।

शिक्षित और बुद्धिमान व्यक्ति अपने लक्ष्यों को सकारात्मक, त्वरित, ठोस, दीर्घ और विशिष्ट प्रारूप में बनाकर उन तक पहुँचना जानता है। प्रत्येक व्यक्ति जीवन में अपने तय किए गए लक्ष्य तक ही पहुँचना चाहता है। ऐसे में यह पुस्तक आप सभी के लिए लाभकारी होगी। चाणक्य के द्वारा कही गई बातों का कहाँ, क्या, किस संदर्भ में कैसे उपयोग किया जा सकता है, यह पुस्तक पाठकों को यह बताने में मदद करेगी। अगर किसी एक भी पाठक को इस पुस्तक के माध्यम से अपने जीवन और लक्ष्य को खूबसूरत पड़ाव तक पहुँचाने में मदद मिलती है तो इस पुस्तक का लेखन सार्थक हो जाएगा।

विषय-सूची

आमुख

सफलता की नींव : अभ्यास

विद्या मनुष्य की पतवार

स्त्री-शक्ति

वैवाहिक जीवन

पशु-पक्षियों के गुण

चाणक्य के नजरिए से बच्चों का विकास

समृद्धि को जान, खूब करें दान

खेल हैं जीवन के पाठ

समस्याओं से निपटने के उपाय

सफलता की नींव : अभ्यास

आचार्य वचन

• बूँद-बूँद से घड़ा भर जाता है, बूँद-बूँद के मिलने से नदी बन जाती है, पाई-पाई जोड़ने पर व्यक्ति धनवान बन जाता है। उसी प्रकार यदि निरंतर अभ्यास किया जाए तो मनुष्य के लिए कोई भी विद्या अप्राप्य नहीं रहती।

• आलस्य और अनभ्यास विद्वानों की बुद्धि को भी भ्रष्ट करके उनके ज्ञान का नाश कर देता है।

• जो विद्वान् निरंतर अभ्यास नहीं करता, उसके लिए शास्त्र भी विष के समान हो जाते हैं।

अनिवार्य है अभ्यास

प्रत्येक व्यक्ति जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहता है। सफल व्यक्तियों के उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है, पर क्या सफल व्यक्ति जन्म से सफल थे? कोई भी व्यक्ति जन्म से सफल हो ही नहीं सकता। जन्म लेने की नैसर्गिक प्रक्रियाएँ हैं। परिवेश, अभ्यास, स्थितियाँ एवं प्रतिकूल परिस्थितियाँ ही व्यक्ति को किसी भी क्षेत्र एवं कार्य में निपुण बनाती हैं। विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडीसन ने अनेक आविष्कार किए। उनका सबसे महत्त्वपूर्ण आविष्कार बल्ब की खोज था, जिसने घर-घर को रात्रि के अंधकार से मुक्त कर प्रकाश से भर दिया। इसके अलावा भी उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण आविष्कार किए थे। इस दौरान कई बार वे असफल रहे, पर उन्होंने अपनी किसी भी असफलता को असफलता न मानकर उसे अभ्यास माना और यह स्वीकार किया कि निरंतर अभ्यास ने उन्हें परिपक्व बनाते हुए जीवन के क्षेत्र में प्रवीण बनाया है। विद्या में परिपक्व एवं कुशल बनने के लिए अभ्यास और केवल अभ्यास ही अनिवार्य है। जिस व्यक्ति के अंदर अभ्यास करने की क्षमता है, उसे किसी अन्य वस्तु की आवश्यकता नहीं होती। अपने अभ्यास के माध्यम से वह हर अनिवार्य वस्तु स्वयं किसी-न-किसी तरह प्राप्त कर ही लेता है।

चाणक्य कहते हैं कि अभ्यास के बिना विद्वान् भी शास्त्रों का यथोचित वर्णन नहीं कर पाता और लोगों के बीच उपहास का पात्र बन जाता है। इसी तरह निरंतर अभ्यास के बिना सरल-से-सरल कार्य भी कठिन प्रतीत होता है, जबकि अभ्यास क्लिष्ट-से-क्लिष्ट कार्य को भी सहज, सरल एवं सुंदर बना देता है। चाणक्य बचपन से ही बेहद चतुर, परिश्रमी और व्यावहारिक थे। उन्होंने अपनी आयु की सीढ़ी-दर-सीढ़ी अनेक ऐसे अनुभव प्राप्त किए, जो प्रत्येक व्यक्ति के व्यक्तित्व को गढ़ने के लिए अनिवार्य होते हैं। अभ्यास भी उन्हीं में से एक है।

अभ्यास की अवस्था

किसी भी कार्य को सीखने एवं अभ्यास करने का सबसे उत्तम समय बाल्यावस्था होती है। बचपन में बच्चा कोमल एवं बेहद संवेदनशील होता है। वह हर कार्य को वास्तविकता के धरातल पर समझकर उसमें तन-मन से अपने श्रम का व्यय करता है और उसमें पारंगत हो जाता है। द्वापर युग में पाँच पांडवों में अर्जुन से लेकर कलयुग में सचिन तेंदुलकर तक इसके सशक्त उदाहरण हैं। कई बार परिस्थितियों एवं परिवेश के कारण व्यक्ति बाल्यावस्था में अभ्यास के महत्त्व से वंचित रह जाता है। ऐसे में वह किशोरावस्था, युवावस्था अथवा प्रौढ़ावस्था में भी कार्य को सीख सकता है।

अभ्यास क्या होता है?

वह कार्य, जिसको बार-बार और लगातार किया जाता है, वह अभ्यास होता है। प्रारंभ में किसी भी कार्य को करते समय कष्ट और पीड़ा होती ही है। लेकिन यह कष्ट और पीड़ा अप्रत्यक्ष रूप से सफलता एवं उपलब्धि का आरंभ होता है, किसी भी कार्य को सीखने की आरंभिक योग्यता में व्यक्ति को जो दर्द, पीड़ा, बेचैनी और अवसाद का अनुभव होता है, दरअसल वह व्यक्ति के शरीर और मस्तिष्क को एक कुशल आकृति में ढाल रहा होता है, ठीक उसी तरह, जिस तरह शारीरिक व्यायाम को आरंभ करते समय कुछ दिनों तक लगातार पीड़ा और दर्द होता है और यह मन करता है कि बस अब अगले दिन अभ्यास न किया जाए; लेकिन कुछ दिनों तक अभ्यास करने के बाद धीरे-धीरे शरीर उसका अभ्यस्त होता जाता है और फिर एक दिन ऐसा आता है, जब व्यक्ति कठिन-से-कठिन व्यायाम अथवा कार्य कर लोगों को दाँतों तले अंगुली दबाने पर मजबूर कर देता है।

जब किसी कार्य को अनेक बार दोहरा लिया जाता है तो वह स्वचालित बन जाता है और फिर लगातार अभ्यास के कारण व्यक्ति उनको खेल की तरह आनंद लेते हुए करता है। इसको इस तरह से समझा जा सकता है कि पियानो में केवल 88 कुंजियाँ होती हैं और स्केल में सिर्फ आठ तानें होती हैं, लेकिन एक कुशल पियानोवादक उन्हीं 88 कुंजियों का प्रयोग करके हर बार उनसे अलग और मीठी धुन निकाल लेता है। ऐसा कैसे होता है? ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि पियानोवादक पियानो पर लगातार अभ्यास कर उन कुंजियों को अपने अनुरूप ढालना सीख चुका होता है। इतना ही नहीं; अभ्यास के माध्यम से आँखों पर पट्टी बाँधकर भी निशाना लगाया जा सकता है। नेत्रहीन व्यक्ति भी अभ्यास के माध्यम से कुशल होकर विश्व प्रसिद्ध बन सकता है।

प्यूटो रिको में जोस फेलिसियानो का जन्म हुआ था। दुर्भाग्यवश वे नेत्रहीन थे। उनकी नेत्रहीनता पर लोगों ने अनेक कटाक्ष और व्यंग्य किए। उन्हें कटोरा लेकर भीख माँगने तक का सुझाव दिया, परंतु जोस फेलिसियानो ने लोगों के व्यंग्य बाणों को दरकिनार करते हुए अभ्यास को अपने जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अंग बना लिया। उन्हें कहीं से एक पुराना गिटार मिल गया। वे दिन-रात गिटार पर अभ्यास करते रहते। उनकी अभ्यास करने की क्षमता इतनी अधिक थी कि घंटों-घंटों अभ्यास करते-करते उनकी अंगुलियों से रक्त निकलने लगता था। आज पूरा विश्व जोस फेलिसियानो को एक महान् गिटारवादक के रूप में जानता है।

लगातार अभ्यास के कारण हरियाणा के समालखा की जाह्नवी गूगल गर्ल जिया, पंजाब के अबोहर जिले में रहनेवाली उपासना अपने अद्भुत कार्यों से पूरे विश्व को हैरत में डाल चुकी हैं।

अभ्यास का आदर्श समय कितना?

चाणक्य कहते हैं कि आलस्य और अनभ्यास विद्वानों की बुद्धि को भी भ्रष्ट करके उनके ज्ञान का नाश कर देता है। इसलिए अभ्यास जारी रखें। यह पढ़ने के बाद कुछ लोगों के मन में यह प्रश्न अवश्य आ रहा होगा कि चाणक्य ने यदि अभ्यास पर इतना अधिक बल दिया है तो यह भी तो ज्ञात होना चाहिए कि आखिर अभ्यास का यह समय कितना होना चाहिए, क्या जीवन भर ही व्यक्ति अभ्यास करता रहे, यदि व्यक्ति जीवन भर अभ्यास करेगा तो फिर कार्य में निपुण कैसे और कब बनेगा?

अभ्यास के संदर्भ में मनोवैज्ञानिकों और विशेषज्ञों का मानना है कि योग्यता के उच्चतम स्तर तक पहुँचने के लिए किसी भी व्यक्ति को लगभग 10,000 घंटों तक के गुणवत्तापूर्ण अभ्यास की आवश्यकता होती है। यह 10,000 घंटों का नियम हर व्यक्ति पर लागू होता है। धावक, अभिनेता, चित्रकार, लेखक, संगीतकार, वैज्ञानिक सभी पर 10,000 घंटों के अभ्यास का नियम लागू होता है। यदि एक व्यक्ति एक दिन में लगभग तीन घंटे किसी कार्य का प्रतिदिन अभ्यास करता है तो वह 365 दिन में यानी कि एक वर्ष में 1095 घंटों का अभ्यास करेगा। दस हजार घंटों तक पहुँचने के लिए उसे लगभग नौ से दस वर्ष तक का समय लगेगा। इस समय को व्यक्ति अपनी आवश्यकतानुसार बढ़ा अथवा घटा सकते हैं।

अगर व्यक्ति लगातार एकाग्रचित्त होकर इन 10,000 घंटों के अभ्यास को पूर्ण कर लें तो ऐसा हो ही नहीं सकता कि उन्हें मनोवांछित परिणाम प्राप्त न हों।

इसलिए चाणक्य लगातार अभ्यास पर बल देते थे। उन्होंने पाटलिपुत्र के अनैतिक, अत्याचारी और क्रूर राजा धनानंद को राजगद्दी से उतारकर उसके स्थान पर साहसी, चतुर, धैर्यवान चंद्रगुप्त मौर्य को बिठाया। चंद्रगुप्त मौर्य को राजसिंहासन तक पहुँचाने के लिए चाणक्य ने चंद्रगुप्त को राज-काज से लेकर प्रत्येक कार्य तक का तब तक अभ्यास कराया, जब तक चंद्रगुप्त मौर्य उसमें निपुण न हो गए। इतिहास जानता है कि चंद्रगुप्त मौर्य ने एक नए और विशाल भारत की नींव रखी। यह नींव बिना अभ्यास के असंभव थी।

परिणाम अभ्यास की गति पर आधारित होता है

दसवीं एवं बारहवीं कक्षा अथवा उच्च प्रतियोगी परीक्षाओं में विजेता रहनेवाले सभी उम्मीदवारों का मुख्य जवाब एक ही होता है—अभ्यास। कठिन-से-कठिन विषय भी अभ्यास के माध्यम से सरल लगने लगता है, वहीं सरल से सरल विषय भी दुरूह हो जाता है, यदि उसका लगातार अभ्यास न किया जाए। अभ्यास की गति परिणाम सुनिश्चित करती है। यदि अभ्यास की गति तीव्र होगी तो परिणाम आश्चर्यजनक प्राप्त होंगे। वहीं धीमी अभ्यास की गति परिणाम भी धीमी गति से ही प्रदान करेगी।

चाणक्य शिक्षा

व्यक्ति चाहे विद्वान् हो अथवा अनपढ़, बालक हो अथवा बूढ़ा, महिला हो अथवा पुरुष, प्रत्येक व्यक्ति के लिए अभ्यास अनिवार्य है। जितना अधिक अभ्यास, उतनी अधिक सफलता। अभ्यास जीवन को परिष्कृत करता है, व्यक्ति को अकल्पनीय सुख-समृद्धि एवं यश प्रदान करता है। चाणक्य की यही शिक्षा है कि निरंतर अभ्यास करो। अगर कोई विद्वान् भी निरंतर अभ्यास नहीं करता तो उसके लिए शास्त्र विष समान हो जाते हैं। वहीं निरंतर अभ्यास से औसत क्षमता के व्यक्ति भी विद्वान् बन जाते हैं।

□

विद्या मनुष्य की पतवार

आचार्य वचन

विद्या कामधेनु गाय के समान है। जिस प्रकार कामधेनु से युक्त व्यक्ति भूखा नहीं मर सकता, उसी प्रकार विद्यार्जन के उपरांत मनुष्य किसी भी संकट को झेलने के योग्य हो जाता है। परदेश में विद्या ही माँ के समान है, जो कदम-कदम पर मनुष्य की रक्षा करती है। विद्या ही वह गुप्त धन है, जिसे कोई चुरा नहीं सकता, अपितु इसे जितना अधिक खर्च किया जाएगा, उतनी ही यह बढ़ती जाएगी।

विद्या प्राप्ति के लिए आयु की कोई सीमा नहीं होती

JOIN CHANNELS

HTTPS://T.ME/EBOOKSIND

HTTPS://T.ME/BOOKS_KHAZANA

HTTPS://T.ME/GUJARATIBOOKZ

HTTPS://T.ME/MARATHIBOOKZ

विद्या एक ऐसा धन है, जो सारे धनों को उत्पन्न करने में निर्णायक भूमिका निभाती है। एक शिक्षित व्यक्ति अधिक परिपक्व, समझदार, संस्कारी होता है। विद्या मस्तिष्क को परिष्कृत करती है, सुलझाती है और उसे नई दिशा की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। आदिकाल से ही शिक्षा एवं विद्यार्जन का महत्त्व रहा है। सतयुग, द्वापर युग, त्रेता युग और कलयुग—हर युग में विद्या ग्रहण करने पर बल दिया जाता रहा है। विद्या के अंतर्गत केवल पुस्तकों का ज्ञान ही नहीं, अपितु व्यावहारिक ज्ञान एवं कौशल भी शामिल है। अस्त्र-शस्त्र विद्या, कला की विधाएँ व्यक्ति को कला विशेष एवं कार्य में निपुण बनाती हैं। व्यक्ति जीवन भर सीखता ही रहता है। सीखने से ही व्यक्ति एक दिन विद्वान् बनता है। वह व्यक्ति, जो सीखता नहीं है अथवा सीखना छोड़ देता है, जीवन के अंतिम पड़ाव पर आ जाता है। फिर यह बात महत्त्व नहीं रखती कि उसकी आयु क्या है? वह व्यक्ति, जो सीखने से इनकार कर देता है अथवा सीखना बंद कर देता है, वृद्ध हो जाता है, चाहे उसकी उम्र पंद्रह वर्ष हो अथवा पैंसठ वर्ष। विद्यार्जन करने की कोई आयु नहीं होती। जब तक व्यक्ति जीवित है, तब तक वह विद्या ग्रहण कर सकता है और उसका उपयोग कर सकता है।

केरल की निवासी कार्तियानी ने 96 वर्ष की आयु में केरल सरकार द्वारा चलाई जा रही साक्षरता मिशन योजना के अंतर्गत परीक्षा देकर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। उन्होंने 100 में से 98 अंक प्राप्त किए। कार्तियानी के जज्बे को देखकर यह ज्ञात हो जाता है कि शिक्षा की कोई उम्र नहीं होती। जब मन में एकाग्रता एवं लगन लग जाती है तो कठिन-से-कठिन विद्या भी सरल बन जाती है।

शैशव काल से विद्या ग्रहण करना है उत्तम

यदि बचपन से ही विद्या ग्रहण की जाए तो व्यक्ति बेहद समझदार होता जाता है। स्वयं चाणक्य ने भी बेहद कम आयु में ही वेदों का अध्ययन करना आरंभ कर दिया था। इतना ही नहीं, अल्पायु में ही वे वेदों के ज्ञाता हो गए थे। चाणक्य ने व्यावहारिक और प्रायोगिक ज्ञान तक्षशिला से प्राप्त किया था। चाणक्य के पिता चणक भी एक शिक्षक थे। वे शिक्षा के महत्त्व को समझते थे, इसलिए उन्होंने चाणक्य को भी शिक्षा की ओर प्रेरित किया। तक्षशिला से अपनी शिक्षा प्राप्त करने के बाद चाणक्य भी वहीं पर शिक्षक के रूप में नियुक्त हो गए थे और विद्यार्थियों को पढ़ाने लगे थे। वे उन्हें अर्थशास्त्र और दर्शन को बहुत ही व्यावहारिक तरीके से समझाते थे। कम आयु में ही शिक्षा की ओर प्रेरित होने के कारण चाणक्य स्वयं शिक्षा के महत्त्व को भलीभाँति समझते थे। इसलिए उन्होंने पाटलिपुत्र के दुष्ट और अनैतिक राजा धनानंद का अंत करने के लिए चंद्रगुप्त मौर्य की तलाश कर उन्हें उचित शिक्षा देना प्रारंभ कर दिया था।

विद्या के लिए लगन और हौसला है जरूरी

जीवन में विद्या मानव के लिए अनिवार्य है। यह तो हम सभी जानते हैं और समझते हैं। आजकल बचपन से ही बच्चों का स्कूलों में दाखिला करा दिया जाता है, ताकि वे विद्या ग्रहण करके अपने लिए कामयाबी की सीढ़ियाँ तैयार कर सकें। अगर विद्या प्राप्त करके ही जीवन के रणक्षेत्र में सफल हुआ जा सकता तो फिर अनेक ऐसे व्यक्तित्व, जिन्होंने नाममात्र की शिक्षा ग्रहण की अथवा जो थोड़े समय के लिए ही स्कूल गए, वे इतने प्रसिद्ध क्यों हुए? वे इसलिए प्रसिद्ध हुए, क्योंकि उन्होंने केवल पढ़ाई को ही नहीं, अपितु अन्य कार्यों को विद्या की तरह तन्मयता से सीखा। क्रिकेट, अभिनय, संगीत, लेखन, फुटबॉल व ऐसे ही अन्य कई कार्यक्षेत्र हैं, जिनके लिए आज कोचिंग दी जाती है। कोचिंग निश्चित रूप से लाभदायक होती है, लेकिन केवल उनके लिए, जो एकाग्रचित्त होकर इसको सीखते हैं। यदि व्यक्ति के अंदर लगन उत्पन्न हो जाए तो वह जीवन के निम्न स्तर पर रहते हुए भी उच्च स्तर तक आ सकता है और अपने समकक्ष सभी लोगों को चित कर सकता है।

विंस रॉबर्ट 37 वर्ष की आयु तक टैक्सी चलाते थे। वे केवल पाँचवीं कक्षा पास थे। वे घंटों-घंटों सवारी की प्रतीक्षा के लिए होटलों, एयरपोर्ट आदि के सामने खड़े रहते थे। सवारी की प्रतीक्षा करते हुए विंस रॉबर्ट अकसर मधुर स्वप्न में खो जाते थे कि एक दिन उनके पास भी बंगला, गाड़ी और सुविधाओं की सभी वस्तुएँ होंगी। एक दिन वे जब सुखद सपनों में खोए हुए थे, तभी एक सवारी ने उनकी चेतना भंग करते हुए कहा, "कृपया मुझे गंतव्य तक पहुँचा दीजिए।" विंस ने सवारी की बात नहीं सुनी तो सवारी ने उनके आगे चुटकी बजाते हुए कहा, "क्या हुआ, धन, दौलत और प्रसिद्धि के खयालों में खोए हो क्या?" यह सुनकर विंस की चेतना जगी। वे सवारी से बोले, "भला मेरे पास इतना धन कैसे, कब और कहाँ से आ सकता है? मेरे अंदर तो कोई योग्यता ही नहीं है।" इस पर सवारी ने मुसकराकर कहा, "योग्यता सबके अंदर होती है, बस विद्या से उसे तराशना पड़ता है।" सवारी की इस बात ने विंस के तन-मन को हिला दिया। एक दिन वे एक पुस्तकों की दुकान में गए और वहाँ से बीस पाउंड की वेबस्टर डिक्शनरी ले आए। उन्होंने उस डिक्शनरी को अपनी टैक्सी के आगे की सीट पर रख दिया। उत्सुकतावश खाली समय में उन्होंने उसका एक पृष्ठ खोला और उसका एक-एक शब्द पढ़ना आरंभ कर दिया। धीरे-धीरे उन्हें पढ़ने में आनंद आने लगा और वे डिक्शनरी के एक-एक शब्द को याद करने लगे। डिक्शनरी की मोटाई का लगभग आठवाँ हिस्सा पार करने के बाद उन्हें पढ़ाई से संबंधित सभी लिखी-सुनी बातें समझ आने लगीं। वे टैक्सी स्टैंड पर उन शब्दों को दोहराते रहते। ऐसे ही उन्हें शेयर बाजार में उत्सुकता उत्पन्न हो गई। शेयर बाजार की बारीकियों को समझकर उन्होंने उसमें धन लगाना आरंभ कर दिया। उनकी व्यक्तिगत संपत्ति बढ़ने लगी और उन्होंने 19 टैक्सीवाली एक कंपनी का निर्माण कर दिया। आज दुनिया उन्हें एक अरबपति व्यक्ति के रूप में जानती है।

इस तरह विंस रॉबर्ट ने विद्या प्राप्ति के लिए टैक्सी स्टैंड पर डिक्शनरी को पढ़ना आरंभ किया और अपने सपनों को पूरा कर लिया।

विद्या जीवन की श्वास है

वर्तमान समय में विद्या की महत्ता केवल इसी बात से समझी जा सकती है कि चाणक्य ने सदैव विद्या पर बल दिया। वे तो यहाँ तक कहते थे कि "जहाँ विद्या अध्ययन संभव न हो, ऐसे स्थान पर नहीं रहना चाहिए।" इतना ही नहीं, चाणक्य चंद्रगुप्त मौर्य के मामा से बेहद रुष्ट थे, क्योंकि उनके मामा चंद्रगुप्त मौर्य की शिक्षा के खिलाफ थे और उनका कहना था कि चंद्रगुप्त के चले जाने से उन्हें आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी। उनकी हानि को पूरा करने के लिए उन्होंने चाणक्य से रुपयों की माँग की। चाणक्य के पास भला रुपए कहाँ से होते! वे तो एक शिक्षक थे। एक ऐसे शिक्षक, जो हर हाल में अपने विद्यार्थी को पढ़ाने के प्रयत्न करता है। चंद्रगुप्त मौर्य में उन्होंने संभावनाएँ देख ली थीं, इसलिए उन्हें मामा की बात माननी पड़ी। धन जुटाने के लिए चाणक्य ने अपनी सारी पुस्तकें और बहुमूल्य ग्रंथ बेचे और चंद्रगुप्त के मामा को धनराशि दी। शिक्षक होने के कारण और विद्या से अत्यंत लगाव होने के कारण उन्हें चंद्रगुप्त की शिक्षा जारी रखने के लिए ग्रंथरूपी दूसरी शिक्षा को बेचना पड़ा। शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का मौलिक अधिकार है। चाणक्य तो चाहते थे कि प्रत्येक बच्चे को शिक्षा निःशुल्क मिलनी चाहिए, ताकि शिक्षा का प्रतिशत बढ़े और देश की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ हो।

विद्या प्राप्ति के तरीके और शब्दशक्ति

चाणक्य कहते थे कि विद्यार्जन करनेवाले मनुष्य की समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। विद्या के द्वारा समस्त विकारों का नाश हो जाता है। आखिर विद्या प्राप्ति के कौन से ऐसे सरल तरीके हैं, जो सभी के लिए सहज हो सकते हैं।

विद्या प्राप्ति के अनेक तरीके हैं। इन तरीकों का प्रयोग करके एक साधारण एवं अशिक्षित व्यक्ति चतुर, शिक्षित एवं असाधारण व्यक्तित्व में परिवर्तित हो सकता है—

- चारों ओर पैनी नजर रखें।
- शब्दों को सावधानी से चुनें। चाणक्य कहते हैं कि शरीर के अंदर धँसे लोहे के भयानक बाण को खींचकर बाहर निकाला जा सकता है, लेकिन कड़वे शब्द बाण को कदापि नहीं निकाला जा सकता, क्योंकि वह हृदय के अंदर

धँस जाता है। इसलिए शब्दों का प्रयोग बेहद बुद्धिमत्ता और सूझ-बूझ से करना चाहिए। अपशब्दों का प्रयोग तो कदापि नहीं करना चाहिए। डेविड ओल्सन की 'द वर्ड्स यू शुड नो' में 1200 ऐसे शब्द हैं, जो प्रत्येक व्यक्ति को ज्ञात होने चाहिए और उनका प्रयोग भी करना चाहिए।

भाषा के शब्दों की अपनी खूबसूरती होती है। शब्द वाक्यों का रूप लेते हैं और हर घटना को कलमबद्ध करते हैं। शब्दों से ही इतिहास बनता है, वर्तमान गढ़ता है और भविष्य की आधारशिला तैयार होती है। जो व्यक्ति विद्या का गहनता से अध्ययन करता है, वह विद्वान् बन जाता है। उसे शब्दों का जादू की तरह प्रयोग करना आ जाता है। जीवन में ही जादू नहीं होता, बल्कि शब्दों में भी जादू होता है। हर शब्द के पीछे भाव है, अर्थ है, विस्तार है और उसके होने का सार है।

अनपढ़—इस शब्द का अर्थ है वह व्यक्ति, जो शिक्षित न हो। अब 'अनपढ़' के एक-एक स्वर व व्यंजन पर ध्यान दिया जाए तो यह बना 'अक्षर न पढ़', 'अक्षर न पढ़' का संक्षिप्त रूप हो गया 'अनपढ़'।

इसी तरह हिंदी में 'राम' के अनेक अर्थ देखने को मिलते हैं, जैसे—

अर्थ —वाक्य

राम-नाम ——राम स्कूल गया।

राम-राम ——नमस्कार—राम-राम। सब ठीक है न?

राम-राम-राम-उफ्। राम-राम-राम, क्या जमाना आ गया है? कोई किसी की सुनता ही नहीं है।

यदि व्यक्ति तन-मन और समर्पण से शिक्षा ग्रहण करता है तो वह न केवल नई-नई बातें सीखता है, बल्कि नई-नई बातों और शब्दों को दुनिया के सामने ला भी सकता है। इसलिए चाणक्य ने विद्या को सर्वोपरि माना है। यदि व्यक्ति शिक्षित है तो वह जीवन की सभी चुनौतियों को पार कर सकता है।

चाणक्य शिक्षा

जिस प्रकार सुगंधित होने के बाद भी ढाक का सुंदर पुष्प न तो देवी-देवताओं पर चढ़ाया जाता है और न ही वह किसी को अपनी ओर आकर्षित कर पाता है, उसी प्रकार रूप-सौंदर्य से परिपूर्ण होने तथा उच्च कुल में जन्म लेकर भी विद्याविहीन मनुष्य मान-सम्मान प्राप्त नहीं कर सकता। रूप, सौंदर्य, धन, संपत्ति, बल, उच्च कुल एवं यौवन इनकी शोभा बुद्धि और विद्या द्वारा बढ़ती है। इसके अभाव में मनुष्य ढाक के पुष्प के समान है। विद्या मनुष्य के लिए अनिवार्य है। विद्या के अभाव में व्यक्ति का सर्वांगीण विकास असंभव है। विद्या है तो व्यक्ति अपने लिए स्वयं सीढ़ी का निर्माण कर सकता है और शिखर पर पहुँच सकता है।

□

स्त्री-शक्ति

आचार्य वचन

- स्त्री भी धन के समान है, इसलिए उसकी भी रक्षा करें।
- पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों का साहस छह गुना होता है।
- स्त्री यदि हठ पर आ जाए तो वह क्या कर सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।
- स्त्री की शक्ति के विषय में मनुष्य अनभिज्ञ होते हैं।

स्त्री-शक्ति अनुपम

स्त्री के बिना परिवार, समाज, देश किसी का अस्तित्व नहीं है। कोई भी परिवार, समाज और देश स्त्री के बल पर ही अपनी पहचान प्राप्त करता है। सदियों से स्त्रियों को दोयम दर्जे पर रखा जाता रहा। उसका मुख्य कारण शायद पुरुष प्रधान समाज का होना ही रहा है, क्योंकि शास्त्रों से लेकर चाणक्य नीति तक में स्त्री की शक्ति एवं उसके व्यक्तित्व को अनुपम बताया गया है। स्वयं स्त्रियों ने भी अपने कार्यकलापों एवं साहस से प्रारंभ से ही इस बात को साबित भी किया है। यदि हम पौराणिक काल की ओर देखें तो पाएँगे कि वहाँ पर माँ दुर्गा ने अनेक रूपों में असुरों का संहार किया और असुरों के अत्याचारों से त्रस्त लोगों को मुक्ति प्रदान की। रामायण, महाभारत के पीछे हमेशा से ही यह गलत संकल्पना चली आ रही है कि स्त्रियों के कारण ही युद्ध हुए। हालाँकि इसके पीछे यह मनोवैज्ञानिक अवधारणा भी प्रच्छन्न है कि स्त्री का एक छोटा सा अपमान पूरी सृष्टि को तहस-नहस कर सकता है। स्वयं चाणक्य जैसे विद्वान् भी स्त्री के संदर्भ में यह कहते नजर आते हैं कि "स्त्री यदि हठ पर आ जाए तो वह क्या कर सकती है, इसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। स्त्रियों को उचित परिवेश मिले अथवा नहीं, लेकिन तब भी वे स्त्रियाँ, जिनके अंदर कुछ अद्‌भुत करने की उमंग होती है, हर विपरीत परिस्थिति से लड़ते हुए प्राप्त कर लेती हैं।

प्राचीन काल से ही स्त्री विविध कार्यों में चतुर रही है

चाणक्य ने स्त्रियों की शक्ति को असीम बताया है। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल से ही स्त्री विविध कार्यों में पुरुषों से अधिक चतुर रही है। युवाल नोवा हरारी ने 'सेपियंस' पुस्तक में मानव जाति के विकास की विस्तृत व्याख्या की है। उन्होंने भी कहा है कि स्त्रियों में कूटनीति, दूसरों के नजरिए से चीजों को देखने की काबिलीयत बेहद अधिक होती है। मनुष्य जाति के विकास के समय धीरे-धीरे समाज पुरुष प्रधान बनता गया और उसने अपने खाँचे के अनुरूप स्त्रियों को एक सीमित साँचे में ढाल दिया। प्राचीनकाल में स्त्रियाँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी यही मानती रहीं कि वे पुरुषों से कमतर हैं, लेकिन शिक्षित स्त्रियों ने अनेक वर्षों से चली आ रही उन कुरीतियों के विरुद्ध आवाज उठाना प्रारंभ कर दिया, जो महिलाओं के अधिकारों का हनन करती थीं। मानव के विकास की कहानी को जानने के बाद भी इस बात को सहजता से समझा जा सकता है कि पुरुष और स्त्री, दोनों ही पूर्ण रूप से एक-दूसरे पर आश्रित हैं। स्त्री कतई कमतर नहीं है, बल्कि शोध की नोक पर यह एहसास हो जाता है कि स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक चतुर एवं प्रतिभाशाली होती हैं। विश्व की महिलाओं के साथ ही भारतीय महिलाएँ भी यह साबित कर चुकी हैं।

भारतीय सेना, नौसेना एवं वायुसेना में महिलाओं की शक्ति

भारतीय सेना : भारतीय सेना की मेजर के. रेणुका ने 194 किलो वजन की बाइक, 18605 फीट की ऊँचाई और माइनस 30 डिग्री तापमान व बर्फीले थपेड़ों के बीच 14 दिन में 1100 किलोमीटर का बाइक अभियान कुशलतापूर्वक पूरा कर के यह साबित कर दिया है कि जब हौसला और विश्वास हो तो कैसी भी विपरीत परिस्थिति आपके मार्ग की बाधा नहीं बन सकती। उन्होंने 'हिमालयन हाइट बाइक अभियान' टीम को लीड किया। कारगिल विजय दिवस की 20वीं सालगिरह मनाने और शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए भारतीय सेना ने रॉयल इनफील्ड के साथ मिलकर यह अभियान 7 अप्रैल, 2019 को लेह से फ्लैग ऑफ किया। यह बेहद कठिन मार्ग था, जिसे मेजर के. रेणुका ने भारी वजन की बाइक पर सफलतापूर्वक पूरा कर देश का नाम रोशन किया।

इसी तरह ब्लैक बेल्ट हासिल करनेवाली डॉ. सीमा राव आज भारत की एकमात्र महिला कमांडो ट्रेनर हैं। वे अभी तक करीब 20,000 पुरुष जवानों को ट्रेनिंग दे चुकी हैं।

भारतीय नौसेना : भारतीय नौसेना की छह महिलाओं—लेफ्टिनेंट कमांडर वर्तिका जोशी, लेफ्टिनेंट कमांडर प्रतिभा जामवाल, स्वाति पी, लेफ्टिनेंट ऐश्वर्या बोड्डापति, एस. विजया देवी और पायल गुप्ता ने 55 फीट के आई.एन.एस. तारिणी में समुद्र में आठ महीने, यानी कि 254 दिन की यात्रा पूरी करके इतिहास रच दिया। इन्होंने अपनी यात्रा के दौरान 21,600 नॉटिकल माइल की दूरी तय की और दो बार भूमध्य रेखा, चार महाद्वीपों व तीन सागरों को पार किया।

भारतीय वायुसेना : मुंबई की 23 वर्षीय आरोही पंडित ने लाइट स्पोर्ट्स एयरक्राफ्ट से अटलांटिक महासागर को पार किया है। वे ऐसा करनेवाली केवल भारत की नहीं, बल्कि पूरे विश्व की पहली महिला पायलट हैं। आरोही ने 'माही' नामक लाइट स्पोर्ट्स एयरक्राफ्ट से उड़ान भरी। वह एक इंजनवाला साइनस-912 है। जिसका वजन बुलेट मोटरसाइकिल से भी कम केवल चार सौ किलोग्राम है। आरोही लगभग तीन हजार किलोमीटर का सफर तय करके 14 मई, 2019 को कनाडा के इकालुइट हवाई अड्डे पर पहुँचीं। रनवे पर उतरने के बाद उन्होंने विमान से नीचे उतरकर भारत का तिरंगा झंडा अपने हाथों में लेकर जीत का जश्न मनाया और कहा, "भारत और दुनिया की महिलाओं के लिए मैं यह सब कर पाई, मेरे लिए यह गौरव का क्षण है। हलके नीले आसमान और गहरे नीले समुद्र के बीच अकेले एक छोटा सा विमान उड़ाना बेहद रोमांचकारी एहसास था।"

इस प्रकार भारत की तीनों सेनाओं में महिलाओं ने अपनी शक्ति एवं कर्मठता का परिचय देकर यह साबित कर दिया है कि ऊँचाइयों पर पहुँचने के लिए केवल हौसला एवं उत्साह होना चाहिए। यदि दृढ़ निश्चय एवं आत्मविश्वास है तो मंजिल को पाने में 'लिंग' कतई भेद नहीं करता।

भारतीय माँ की शक्ति

यह मिथक है कि घर-गृहस्थी एवं बच्चों के पालन-पोषण में कार्यरत महिलाएँ अपनी पहचान नहीं बना पातीं। इस मिथक को पूरी तरह से मैंगते चंगनेइजैंग मैरी कॉम, अर्थात् एम.सी. मैरी कॉम ने गलत साबित कर दिया है। उनका विवाह 2005 में के. ओंलेर कॉम से हुआ। अब इनके तीन बच्चे हैं। बच्चों की परवरिश करते हुए ही एम.सी.मैरी कॉम ने 24 नवंबर, 2018 को 10वीं ए.आई.बी.ए. महिला विश्व मुक्केबाजी चैंपियनशिप में अपना छठा विश्व चैंपियन का खिताब जीतकर पूरे विश्व को दाँतों तले अंगुली दबाने पर मजबूर कर दिया। आज मैरी कॉम के खाते में अनगिनत पुरस्कार, यश और धन; सबकुछ है। उन्होंने केवल भारतीय समाज में ही नहीं, अपितु पूरे विश्व में इस धारणा को पुख्ता कर दिया है कि यदि महिला को पुरुष वर्ग से पूरा सहयोग मिले तो वह पूरे विश्व को जीत सकती है।

चंद्रगुप्त मौर्य को स्त्री सशक्तीकरण का महत्त्व बताया

चाणक्य ने 2400 वर्ष पहले ही महिला सशक्तीकरण पर बल दिया था। इतना ही नहीं, उन्होंने अपने समय में मौर्यवंश की स्थापना करनेवाले चंद्रगुप्त को भी यह पाठ पढ़ाया था। चंद्रगुप्त मौर्य अपने गुरु चाणक्य के कारण ही इतिहास में अमर हुए। एक दिन चाणक्य ने चंद्रगुप्त मौर्य से राज्य के संदर्भ में चर्चा करते हुए कहा—

"हमें महिलाओं की दशा पर विचार करना चाहिए।"

"क्यों आचार्य, क्या समस्या है? हमारे यहाँ तो महिलाएँ बेहद सुरक्षित हैं।" चंद्रगुप्त मौर्य बोले।

यह सुनकर आचार्य बोले, "इसमें कोई दो राय नहीं है कि हमारे यहाँ महिलाओं की स्थिति बहुत अच्छी है, परंतु मैं इसे और अच्छा बनाना चाहता हूँ।"

"वह कैसे?" चंद्रगुप्त हैरानी से बोले।

"मैं चाहता हूँ कि हर विवाहित स्त्री को यह एहसास होना चाहिए कि उसका भी अपना पृथक् अस्तित्व है और उसके अंदर निर्णय लेने की शक्ति है, इसलिए उन्हें हर तरह के कार्यों में शामिल करना चाहिए। समय-समय पर उनसे राज-काज की बातें भी करनी चाहिए और उनके सुझाव एवं शिकायतें ध्यानपूर्वक सुननी चाहिए। उनमें कई बार गहन मर्म प्रच्छन्न रहता है।"

चंद्रगुप्त आचार्य चाणक्य की यह बात सुनकर हैरत से बोले, "आचार्य, मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा। भला महिलाओं को राज-काज में लाने की क्या आवश्यकता है?"

यह सुनकर चाणक्य बोले, "महाराज! अभी आपको बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है।"

चाणक्य के कहे अनुसार, चंद्रगुप्त मौर्य ने उस दिन राजमाता एवं पत्नी से राज-काज की कुछ गंभीर बातों पर मंत्रणा की तो पाया कि वे दोनों बेहद प्रसन्न हुईं, साथ ही उन्होंने बड़ी समझदारी से अपने विचार भी रखे। यह देखकर चंद्रगुप्त चाणक्य से बोले, "आचार्य, आपकी नीति कारगर रही। दोनों महिलाएँ बेहद खुश थीं।"

चाणक्य बोले, "मैं अभी भी स्त्री की स्थिति से पूरी तरह संतुष्ट नहीं हूँ। उनकी शक्ति असीमित है। वे केवल रसोई में योगदान दे सकती हैं, यह पूरी तरह मिथक है। वे अपना सहज दिमाग और बुद्धि रखती हैं। इसलिए तुम राज-काज में अपनी माता और पत्नी की मदद लिया करो। स्त्री की दृष्टि बेहद महीन होती है और उसके अंदर एक छठी इंद्रिय सदैव विद्यमान रहती है, जो खतरे के संकेत पर जाग्रत् हो जाती है। एक स्त्री ही देश को प्रगति की ओर ले जाने का सबसे सरल मार्ग है।"

चंद्रगुप्त मौर्य ने चाणक्य की इस बात की गंभीरता को समझा और स्त्री-शक्ति को जाग्रत् करने के लिए उन्हें सहयोग देना प्रारंभ कर दिया।

इस प्रकार चाणक्य ने प्रारंभ से ही स्त्री की असीमित शक्ति की गूढ़ता को पहचान लिया था। आज हमारी भारतीय महिलाओं ने अपने कार्यों, योग्यताओं एवं ज्ञान से आसमान को छूकर यह साबित भी कर दिया है कि महिलाओं को यदि पुरुष वर्ग से बराबर सहयोग मिले तो वे पहाड़ को भी अपने मार्ग से हटा सकती हैं।

स्त्री-शक्ति को उभारें—

• स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा पर ध्यान दें। उनके जन्म पर उत्सव मनाएँ। राजस्थान के पिपलांत्री नामक गाँव में तो कन्या के जन्म पर 111 पौधे लगाकर उत्सव मनाया जाता है। हर स्थान पर कन्या के जन्म पर ऐसे ही उत्सव मनाए जाएँ।

• इस पूर्व धारणा को मस्तिष्क से निकाल दें कि स्त्री पराया धन होती है। इसके स्थान पर यह मनोधारणा बनाएँ कि स्त्री केवल एक घर का ही नहीं, अपितु दो-दो घरों का चिराग होती है। यदि बचपन से ही उसके व्यक्तित्व को सशक्त बनाया जाएगा तो दो घरों के चिराग जल उठेंगे अन्यथा उन्हें बुझने में ज्यादा वक्त नहीं लगेगा।

• स्त्री को यथोचित सम्मान दें। चाणक्य ने भी स्त्री के साथ दुर्व्यवहार करने पर कड़े दंड का आदेश दिया। वे कहते थे कि "यदि कोई व्यक्ति बलपूर्वक किसी स्त्री की हत्या कर डाले, बलपूर्वक किसी स्त्री को उड़ा ले जाए, किसी स्त्री के नाक-कान काट ले, धमकी देकर हत्या व चोरी की घोषणा करे तो ऐसे अपराधियों को सूली पर लटका दिया जाए।"

• घर में पुत्री, बहन, पत्नी एवं माँ का सदैव सम्मान करें और उनके गुणों को उभारने का प्रयत्न करें।

• भूलकर भी कन्या भ्रूण की हत्या करने का पाप न करें। हत्या चाहे भ्रूण की हो अथवा प्राणी की, घोर अपराध है।

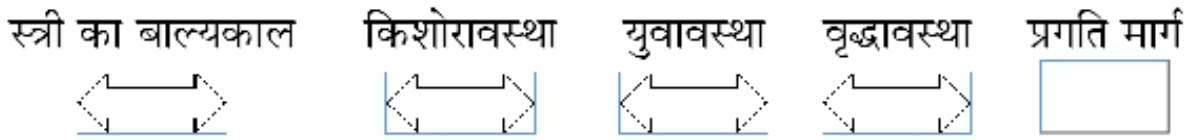

चाणक्य शिक्षा

पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की क्रियावृत्ति हर स्थान पर आगे रहती है। इस दृष्टि से चाणक्य स्त्रियों को पुरुषों के बराबर नहीं, बल्कि पुरुषों से बहुत आगे मानते हैं। उन्होंने अपनी नीति में इसे स्पष्ट करते हुए कहा कि—

"स्त्रियों में आहार दुगना, लज्जा चौगुनी, साहस छह गुना तथा कामोत्तेजना आठ गुना होती है।"

स्त्रियों की मानसिक क्षमता पुरुषों से कई गुना अधिक होती है। इसलिए वे एक साथ कई कार्यों को भलीभाँति कुशलता से कर लेती हैं। एक स्त्री विभिन्न मोर्चों पर कुशलतापूर्वक कार्य करते हुए सफलता अर्जित करती है। वह एक ही समय में नौकरी करती है, बच्चों का पालन-पोषण करती है, वृद्धजनों की सेवा करती है, गृहकार्य करती है और आर्थिक एवं राजनीतिक कार्यों को भी बखूबी करती है। इसलिए इस पुस्तक को पढ़ते समय प्रत्येक स्त्री को स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करना चाहिए कि वह स्त्री रूप में धरती पर उतरी है। वह सृजनकर्ता है और सृष्टि की निर्माता भी। वह लज्जा से स्वयं में सिमटकर रह सकती है तो समय आने पर साहसी बनकर शत्रुओं का विध्वंस भी कर सकती है।

□

वैवाहिक जीवन

आचार्य वचन

- पत्नी के वियोग का दु:ख असहनीय होता है।
- राजा, अग्नि, गुरु और स्त्री; इन चारों की न तो अधिक निकटता ठीक होती है और न ही दूरी।
- दिल में प्यार रखनेवाले लोगों को दु:ख ही झेलने पड़ते हैं।

विवाह के प्रकार

कौटिल्य, यानी कि चाणक्य ने आठ तरह के विवाहों का वर्णन किया है। ये हैं—

1. बाह्य विवाह
2. प्रजापत्य विवाह
3. आर्ष विवाह
4. दैव विवाह
5. गांधर्व विवाह
6. आसुर विवाह
7. राक्षस विवाह
8. पैशाच विवाह

पौराणिक काल से ही ये आठों प्रकार के विवाह होते रहे हैं। इनमें से पहले चार तरह के विवाह को 'धर्मानुकूल विवाह' कहा जाता है, क्योंकि ये परिवार की सहमति से होते हैं। प्राचीनकाल में जब तक व्यक्ति का विकास नहीं हुआ था, तब तक न ही समाज बना था और न ही प्रणालियाँ। कुछ विकासवादी मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि "प्राचीन युग के भोजन खोजी समूहों से पति-पत्नी युगल केंद्रित परिवार नहीं होते थे। ऐसे लोग एकल पति-पत्नी और पितृत्व से वंचित समुदायों में रहते थे।"

विवाह का बंधन

विवाह एक ऐसा बंधन है, जिसमें वर और वधू जन्म-जन्मांतर तक एक-दूसरे के साथ बँध जाते हैं। उन दोनों के सुख-दु:ख एक हो जाते हैं। यदि विवाह सफल रहता है तो वर और वधू समाज में अपनी व्यक्तिगत प्रगति की ओर बढ़ते हैं, लेकिन यदि दुर्भाग्यवश ऐसा नहीं होता तो समाज में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। भारतीय समाज में विवाह प्राय: माता-पिता की सहमति से होते रहे हैं, जो जन्म-जन्मांतर तक चलते हैं, लेकिन आज ऐसा नहीं है। आधुनिक समय में विवाह संस्था पर प्रश्नचिह्न-से लग गए हैं। यदि वर और वधू पक्ष में एक-दूसरे के विचार मेल नहीं खाते तो वह रिश्ता जन्म-जन्मांतर तक का न बनकर केवल एक काला धब्बा बनकर रह जाता है। रिश्ते का टूटना पीड़ादायक होता है। अनेक व्यक्ति तो रिश्ते के टूटने से मनोरोगी बन जाते हैं और कई तो इस कदर टूट जाते हैं कि वे आत्महत्या तक कर लेते हैं। इसलिए वर्तमान समय में वैवाहिक संस्था में सुधार की आवश्यकता है। अब केवल वर ही नहीं, अपितु वधू भी सुशिक्षित एवं आर्थिक रूप से निर्भर होती है। ऐसी स्थिति में वधू अनाचार, अत्याचार और हिंसा को सहन नहीं कर पाती और वह मुखर होकर इनका विरोध करना प्रारंभ देती है। जब मूक स्वर मुखर हो उठता है तो रिश्तों के प्रहरियों का चौंकना स्वाभाविक है। मनोवैज्ञानिकों ने पुरुषों और स्त्रियों की हार्मोन संबंधी और संज्ञानात्मक प्रणालियों के अध्ययन से इस बात की पुष्टि की है कि पुरुषों में आक्रामक और हिंसक प्रवृत्ति अधिक होती है। इसलिए वे पुरुषोचित स्वभाव के कारण महिलाओं से हिंसक व्यवहार कर बैठते हैं। वर्तमान समय में महिलाएँ हिंसक व्यवहार बरदाश्त नहीं करतीं।

चाणक्य मानते हैं कि विवाह बंधन में बँधने के बाद वर एवं वधू पक्ष के सुख-दु:ख एक हो जाते हैं और फिर उन दोनों को सदैव एक-दूसरे के साथ प्रेमपूर्ण तरीके से सामंजस्य बनाकर चलना चाहिए। विवाह के बाद व्यक्ति का परिवार बनता है और परिवार बनने के बाद व्यक्ति लोभ, मोह में फँस जाता है। परिवार जहाँ व्यक्ति को सहारा प्रदान करता है, वहीं वह दु:ख का कारण भी होता है। चाणक्य कहते हैं कि "वह, जो अपने परिवार से अत्यधिक जुड़ा हुआ है, उसे भय और चिंता का सामना करना पड़ता है।"

विवाह बंधन में बँधने के बाद कई बार व्यक्ति की उन्नति एवं अवनति उस पर निर्भर करती है। परिवार बनने के बाद तो यह अत्यंत जरूरी हो जाता है कि पति एवं पत्नी एक-दूसरे का एवं परिवार का ध्यान रखें। परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु व्यक्ति को अपनी इच्छाओं का त्याग करना पड़ता है।

विवाह की बाधा

समाज व्यक्तियों से मिलकर बनता है और व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी भी है, लेकिन वे व्यक्ति, जो बेहद प्रतिभाशाली होते हैं, अकसर अपनी उन्नति तभी कर पाते हैं, जब वे एकाग्रचित्त होकर अकेले ही अपने कार्य में

लगे होते हैं। कई बार व्यक्तियों का साथ और भीड़ व्यक्ति को लक्ष्य से दूर कर देती है। चाणक्य का यहाँ कहना है कि "जब आप तप करते हैं, तब अकेले करें।" यहाँ पर तप का अर्थ केवल पूजा-पाठ से नहीं है, यहाँ पर तप का अर्थ जीवन संघर्ष से है। यदि जीवन संघर्ष में ऐसे साथी हैं, जो एक-दूसरे की भावनाओं को समझते हैं, एक-दूसरे की मदद करते हैं, तब तो विवाह जीवन का सबसे बड़ा वरदान बन जाता है; लेकिन यदि इसके विपरीत होता है तो यही विवाह बंधन अभिशाप बनते देर नहीं लगती। चाणक्य मानते हैं कि बेहद बुद्धिमान, प्रखर और प्रतिभाशाली व्यक्ति इसलिए विवाह नहीं करते, क्योंकि वे अपने लक्ष्य और कार्यों को ही अपनी जीवनसंगिनी और जीवनसाथी चुन लेते हैं। ये सब बातें कुछ हद तक सत्य हैं कि व्यक्ति को विवाह अवश्य करना चाहिए, क्योंकि वह उसे सुरक्षा और स्थायित्व प्रदान करता है, लेकिन इसके साथ यह भी सत्य है कि यदि व्यक्ति अपने लक्ष्य और कर्म के साथ पूर्ण समर्पण भाव के साथ रहे तो वही उसके जीवनसाथी बन जाते हैं। स्वयं चाणक्य इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। वे जीवन भर अविवाहित रहे थे। उन्होंने देश के कल्याण एवं भारत को एक समृद्ध राष्ट्र बनाने के लिए अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया।

चाणक्य के अविवाहित रहने का रहस्य

एक बार चाणक्य के बचपन के मित्र उनसे मिलने के लिए आए। वे चाणक्य की प्रतिभा और शक्तियों को बचपन में ही देख चुके थे और मानते थे कि चाणक्य आम व्यक्तियों से अलग हटकर हैं। चाणक्य के मित्र ने विवाह कर लिया था और उनके परिवार में माता-पिता के अलावा सुशील पत्नी एवं संतान भी थी। अपने बारे में सारी बातें बताने के बाद मित्र ने पूछा, "विष्णु, मुझे मालूम है कि तुम जीवन में किसी विशेष मकसद के साथ आए हो और तुम उसे प्राप्त करके रहोगे।" मित्र की बात पर चाणक्य बोले, "हाँ, मैं भारत को एक सशक्त राष्ट्र में परिवर्तित करना चाहता हूँ और यहाँ पर एक ऐसे राजा को लाना चाहता हूँ, जो सर्वप्रथम प्रजा का हितरक्षक हो।"

मित्र बोला, "वह सब तो ठीक है। तुम्हारे लिए यह लक्ष्य कोई बड़ा नहीं है। तुम धुन के पक्के हो और कुछ भी कर सकते हो। मुझे तो बस यह बताओ कि तुमने विवाह क्यों नहीं किया? कोई भी स्त्री तुमसे विवाह करके अपने भाग्य को सराहती।"

मित्र की बात सुनकर चाणक्य मंद-मंद मुसकरा दिए और दूसरी बातें करने लगे, पर मित्र तो जैसे उनके पीछे पड़ गए थे। वे बोले, "मुझे आज तुम्हारे अविवाहित रहने का रहस्य जानना है।" चाणक्य बोले, "मैं विवाह के खिलाफ नहीं, पर यह मेरे लिए नहीं बना।"

इस पर मित्र आश्चर्यचकित होकर बोले, "क्यों विष्णु?"

चाणक्य ने कहा, "इसलिए, क्योंकि मैं तो पहले से ही विवाहित हूँ।"

"यह तुम क्या कह रहे हो?" मित्र का मुँह खुला-का-खुला रह गया।

"तुमने कब और किसके साथ विवाह किया?"

"मैं देश निर्माण के लक्ष्य और प्रजा के कल्याण से ही अपना विवाह कर चुका हूँ।" यह सुनकर मित्र भला कहाँ चुप रहनेवाले थे। वे बोले, "यह काम तो तुम विवाह के साथ भी कर सकते थे।" चाणक्य अब मंद-मंद मुसकरा रहे थे। वे मित्र की ओर देखकर बोले, "तुम्हारा कहना सही है। विवाह करके भी मैं ऐसा कर सकता था, लेकिन मैं अपना केंद्रबिंदु नहीं खोना चाहता था। विवाह एक बहुत बड़ा दायित्व है और उस दायित्व के लिए कई बार इनसान को बहुत कुछ त्याग करना पड़ता है। यदि विवाह गलत पुरुष या स्त्री से हो जाए तो और ज्यादा मुश्किलें बढ़ जाती हैं। व्यक्ति अपना केंद्रबिंदु केवल एक जगह पर रख सकता है। कई जगह पर ध्यान रखने से किसी भी लक्ष्य को पूरी तरह नहीं पाया जा सकता। चाहे वह लक्ष्य हो, कला हो या मातृभूमि की सेवा हो।" चाणक्य की इन बातों से मित्र समझ गया कि विष्णु बेहद तीक्ष्ण बुद्धि हैं, इसलिए वे हर कदम सोच-समझकर उठाते हैं। इसके बाद उसने कभी भी चाणक्य से यह प्रश्न नहीं किया।

कोई भी हो सकता है जीवनसाथी

वर्तमान संदर्भ में जीवनसाथी से तात्पर्य केवल पति अथवा पत्नी से नहीं है। आज तो व्यक्ति ने बहुत अधिक प्रगति कर ली है। बाजार में अनेक ऐसे उत्पाद आ गए हैं, जो व्यक्ति को अकेलापन अनुभव ही नहीं कराते। यदि इसके बाद भी व्यक्ति को अकेलापन महसूस होता है तो वह उसे सृजनों के माध्यम से खूबसूरत मोड़ दे सकता है। वैसे भी अकेलापन व्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ साथी होता है। अकेलेपन में ही सृजना के सुंदरतम बिंदु उतरते हैं। अकेलेपन में ही व्यक्ति ध्यान की चरमावस्था तक पहुँचता है। अकेलापन ही एकाग्रता स्थापित करता है।

व्यक्ति जीवनसाथी के रूप में पुस्तकों, संगीत, नृत्य, विज्ञान, लेखन, चित्रकला किसी को भी चुन सकता है। यदि आप पुस्तक, कला अथवा विज्ञान को अपना साथी बनाते हैं तो आप कभी अकेले नहीं हो सकते, क्योंकि ये सभी निरंतर प्रगतिशील हैं और नित नूतन-नवीन विचारों के प्रदायक हैं। जिस मस्तिष्क में निरंतर सृजनात्मकता का पहरा रहता है, वहाँ पर परेशानी और समस्या कभी भी अपना स्थान नहीं बना सकते।

परिणय सूत्र में सोच-समझकर बँधें

कई लोग मात्र परिवार को खातिर ही वैवाहिक गठबंधन में बँध जाते हैं, लेकिन फिर अपनी रुचियों एवं जीवन को दिशा देने के लिए वे इस संस्था से मुक्त होने के लिए छटपटाते हैं और आखिरकार स्वयं को मुक्त कर अपनी मंजिल की ओर बढ़ चलते हैं। गौतम बुद्ध ने ऐसा ही किया था। उनका विवाह यशोधरा के साथ हुआ था, लेकिन जीवन से विमुख होने के कारण वे अपनी युवा पत्नी एवं पुत्र राहुल को सोता हुआ छोड़कर ज्ञान की खोज में चले गए थे। गौतम बुद्ध ने तो ज्ञान के माध्यम से निर्वाण की स्थिति को प्राप्त कर लिया था, लेकिन यशोधरा एवं राहुल का जीवन एक त्रासदी बनकर रह गया था। इसलिए विवाह-संबंध में बहुत सोच-समझकर ही बँधना उचित रहता है। विवाह एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी होता है। इसमें जीवनसाथी को अपने साथी के अलावा आगामी संतति एवं बुजुर्ग माता-पिता की भी देखभाल करनी होती है। यह जिम्मेदारी केवल वधू पर लागू न होकर वर पक्ष के लिए भी है। कई बार कन्या अपने माता-पिता की इकलौती संतान होती है, ऐसे में उसके विवाह के बाद बुजुर्ग माता-पिता का जीवन बेहद दयनीय हो जाता है। ऐसे में वर को समझदारी दिखाते हुए उनकी भी सेवा का दायित्व निभाना चाहिए। सही अर्थों में जीवनसाथी की यही परिभाषा है कि एक-दूसरे के दुःख-सुख में जन्म-जन्मांतर तक साथ निभाना।

जिंदगी को जी भर जिएँ

यदि आप अविवाहित हैं, परित्यक्ता हैं अथवा विधवा-विधुर हैं तो परेशान मत होइए, अपनी रुचियों को अपना जीवनसाथी बनाइए। यकीन मानिए, आपकी रुचियाँ आपका जीवन भर साथ निभाएँगी। केवल जीवन के साथ ही नहीं, जीवन के बाद भी। जीवनसाथी से यदि व्यक्ति परेशान हो जाए और उससे अलग होने का निर्णय न ले पाए तो उसका जीवन एक नासूर बनकर रह जाता है। ऐसा नासूर, जिसके साथ ही इनसान को जीना होता है और उसी के साथ मरना होता है। जब जीवनसाथी इच्छानुरूप न हो, प्रताड़ित करनेवाला हो, साथ निभाने की जगह क्लेश को बढ़ावा देनेवाला हो तो जीवन को जीना बेहद मुश्किल हो जाता है। हर वस्तु, स्थिति एवं संबंध के गुण एवं दोष होते हैं। इसलिए यदि आपके पास वह वस्तु, संबंध अथवा स्थिति नहीं है तो गमगीन होने की बजाय अपनी रुचियों को अपना जीवनसाथी बनाइए और जीवन को जी भर के जीना सीखिए। जिंदगी बेहद खूबसूरत लगने लगेगी, क्योंकि जीवन खूबसूरती से जीने के लिए ही होता है, तिल-तिल तड़पने के लिए नहीं।

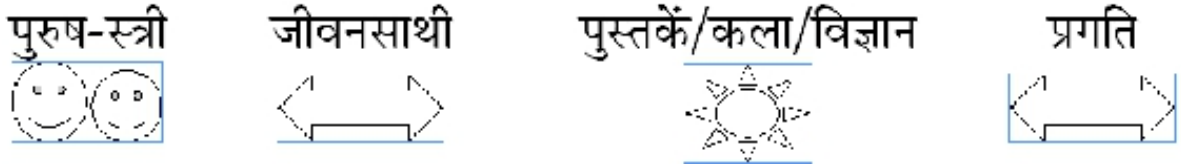

चाणक्य शिक्षा

चाणक्य ने विवाह को जीवन का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कदम माना है। इस कदम को सावधानीपूर्वक उठाना चाहिए, अन्यथा वर व वधू दोनों पक्षों को ही नुकसान उठाना पड़ता है। वैवाहिक संबंध स्थापित करते समय व्यक्ति को वर व वधू पक्ष के चरित्र, शिक्षा एवं कुल के बारे में सही-सही जानकारी एकत्र कर लेनी चाहिए। यह जीवन भर का संबंध होता है। यदि संबंध सही परिवार और व्यक्ति से स्थापित हो जाए तो जीवन सँवर जाता है, अन्यथा जीवन की नैया डूबते देर नहीं लगती। केवल वर व वधू की समझदारी से ही कई बार जीवन पथ सहज लगने लगता है और जीवन श्रेष्ठ लगने लगता है। यदि व्यक्ति असाधारण रूप से प्रतिभाशाली है और वह उसे देश व समाज हित के लिए प्रयोग करना चाहता है तो उसे अपनी प्रतिभा, रुचि एवं कार्यशैली को ही जीवनसाथी बना लेना चाहिए।

□

पशु-पक्षियों के गुण

आचार्य वचन

• मनुष्य को सिंह और बगुले से एक-एक, गधे से तीन, मुरगे से चार, कौए से पाँच तथा कुत्ते से छह गुण ग्रहण करने चाहिए।

• समय पर जागना, युद्ध के लिए सदैव तत्पर रहना, बंधु-बांधवों को उनका उचित हिस्सा देना तथा अपने साथी का ध्यान रखना—मुरगे से ये चार गुण सीखने चाहिए।

• संग्रह की प्रवृत्ति, आलस्य न करना जैसे गुण कौए से ग्रहण करने चाहिए।

• अधिक खाने की शक्ति रखना, अभाव की स्थिति में थोड़े से ही संतोष करना, गहरी नींद में सोना, सोते समय भी सजग रहना, स्वामिभक्ति तथा वीरतापूर्वक शत्रुओं का सामना करना—ये छह गुण कुत्ते से सीखने चाहिए।

• बिना थके परिश्रम करते रहना, सर्दी-गरमी की चिंता न करना तथा धैर्य एवं संतोष—ये गुण गधे से ग्रहण करने चाहिए।

मनुष्य मस्तिष्क

मनुष्य को जीव जगत् में सबसे बुद्धिमान प्राणी कहा गया है। एक मनुष्य ही ऐसा प्राणी है, जो सोच सकता है, बोल सकता है और फिर अपनी सोची एवं बोली गई बातों के अनुरूप कार्य कर सकता है अथवा इसके विपरीत भी कर सकता है, अर्थात् व्यक्ति बिना बोले एवं सोचे भी कार्य करने की क्षमता रखता है। ईश्वर ने मनुष्य के अंदर अनेक ऐसे गुणों को विकसित किया है कि वह ऊँचाइयों को छू सकता है। जन्म के समय हर व्यक्ति समान होता है, बशर्ते कि उनमें जन्मजात कोई विकृति न हो। हालाँकि हौसले के धनी लोग शारीरिक एवं मानसिक विकृति की परवाह न करते हुए आगे बढ़ते हैं और इतिहास को बदल देते हैं। वे अपने श्रेष्ठ कार्यों और बुलंद हौसलों से अन्य व्यक्तियों के लिए एक स्वर्णिम-सी बारीक रेखा तैयार कर देते हैं, ताकि आनेवाली पीढ़ियाँ उस स्वर्णिम रेखा पर चलकर आगे जाकर एक स्वर्णिम महल का निर्माण कर सकें। व्यक्ति अपनी क्षमताओं को जाग्रत् करके दिन-प्रतिदिन के अभ्यास से अपने मस्तिष्क को बेहद शक्तिशाली बना सकता है।

अन्य प्राणियों की बुद्धिमत्ता

मनुष्य एक बुद्धिजीवी है, लेकिन इसका यह तात्पर्य कतई नहीं है कि उसे किसी ओर से सीखने या जानने की आवश्यकता ही नहीं है। प्रकृति एवं जीव जगत् की छोटी-से-छोटी वस्तु एवं जीव भी मनुष्य को बहुत बड़ी सीख देते हैं। चाणक्य ने जीव-जंतुओं की इन्हीं बारीकियों और गुणों को समझा है। उन्होंने मनुष्यों को उनसे सीख लेने के लिए प्रेरित भी किया है।

चींटी की कर्मण्यता

कीट वर्ग का भी मनुष्य जीवन में बहुत महत्त्व है। चींटी सबसे छोटी प्राणी है। यह आकार में 2 से 7 मिलीमीटर के बीच होती है। चींटी का मस्तिष्क बहुत तेज माना जाता है। इसकी मस्तिष्क कोशिकाएँ बहुत ज्यादा होती हैं। चींटी अपनी जीवनशैली से ये बताती हैं कि जिंदगी को सदैव सकारात्मक विचारों के साथ जीना चाहिए, संघर्ष से कभी घबराना नहीं चाहिए। चींटी अपने शरीर के भार से लगभग 20 गुना भार उठाने की क्षमता रखती है, तूफान में भी बचकर निकलना जानती है। चींटी दयावान होती हैं और अपनी साथी चींटियों का ध्यान रखती हैं, यहाँ तक कि उनके लिए भोजन का इंतजाम भी करती हैं। इतना ही नहीं, चींटी अपने जीवन के साथ-साथ हमारे पारिस्थितिकी तंत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। वे मिट्टी के पोषक तत्त्वों का पुनर्चक्रण करती हैं और बीजों के प्रसार एवं विकास में मदद करती हैं।

तितली का छोटा पर खुशहाल जीवन

तितली बहुत सुंदर एवं आकर्षक होती है। इसका जीवनकाल बहुत छोटा होता है। ये अपने छोटे से जीवनकाल में रंग-बिरंगे पंखों के साथ रंग-बिरंगे पुष्पों पर मँडराती हैं और प्रकृति के साथ ही मनुष्यों के जीवन में खुशियाँ बाँटती हैं। तितली यह संदेश देती है कि जीवन चाहे छोटा हो या बड़ा, लेकिन उसे मुसकराकर जीना चाहिए। तितली का जन्म बहुत संघर्ष के साथ होता है और इसके जीवन की सबसे रोचक बात यह है कि इसके अंडे से कुछ समय बाद एक छोटा सा कीट निकलता है। इस कीट को 'लार्वा' कहा जाता है। यह पौधे की पत्तियों को खाकर बड़ा होता है और फिर इसके चारों ओर एक कड़ा सा खोल बन जाता है। अब यह प्यूपा बन जाता है। प्यूपा का खोल बहुत सख्त होता है। इस सख्त खोल को तोड़कर ही उसमें से एक सुंदर तितली का जन्म होता है। इस खोल को तोड़ते समय तितली को अपनी जान की बाजी लगानी पड़ती है, तब वह मुक्त गगन में विचरण करने के लिए स्वतंत्र होती

है। तितली के जीवन की एक खास बात यह है कि यदि प्यूपा बनने पर इसे खोल से निकलने में मदद प्रदान की जाए तो यह अशक्त हो जाती है और कुछ ही समय बाद दम तोड़ देती है। इस तरह इसका सुंदर जीवन यह संदेश देता है कि व्यक्ति जब अकेले ही संघर्ष और पीड़ा के खोल से बाहर निकलकर आता है, तभी वह जिंदगी को जीने के लिए तैयार होता है।

कौए की चतुराई एवं चपलता

चाणक्य बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। वे मनुष्यों, शत्रुओं, मित्रों, स्त्रियों एवं पुरुषों के सबल व निर्बल पक्ष जानने के साथ-साथ पशु-पक्षियों के मजबूत एवं कमजोर तत्त्वों को भी बखूबी समझते थे। कौए के मजबूत पक्ष को भी उन्होंने गहनता से परखा हुआ था। कौआ एक छोटा पक्षी है, लेकिन उसकी बुद्धिमत्ता का कोई सानी नहीं है। एक सामान्य कौआ 15 साल से लेकर 30 साल तक जीवित रहता है। चाणक्य व्यक्ति को कौए के कुछ गुणों को अपने अंदर आत्मसात् करने के लिए प्रेरित करते हैं। कौआ अपनी समस्या सुलझाने के साथ ही अद्भुत संचार कौशल से भी प्रभावित करता है। कौआ एक ऐसा प्राणी है, जो स्वयं को किसी भी समस्या से बखूबी बाहर निकालना जानता है। कौवे पर आलस्य कभी भी हावी नहीं होता। यह वृद्धावस्था के करीब पहुँचकर भी चौकस रहता है। मौसम के अनुरूप कौवा भोजन की तलाश में जुट जाता है और बुरे वक्त के लिए भी संग्रह करके रखता है। कौए को सामान्यतया लोग पसंद भी नहीं करते हैं, लेकिन कौआ एक सामाजिक प्राणी है। इनकी याददाश्त शक्ति बहुत तीव्र होती है और ये जीवन भर मनुष्य के चेहरे को याद रख सकते हैं। कौए का जीवन केवल खाने और मुक्त गगन में विचरण करने तक ही सीमित रहता है। इसके बावजूद वह आलस्य नहीं करता और न ही आलस करनेवाले व्यक्तियों को पसंद करता है।

आलस मनुष्य की एक बहुत बुरी आदत है। इस आदत को अपने जीवन में अपनाने से बचना चाहिए। आलस्य की प्रवृत्ति चतुर एवं गुणवान लोगों के जीवन का भी ह्रास कर देती है। वहीं एक सामान्य बुद्धि का व्यक्ति यदि आलसी प्रवृत्ति का नहीं है और निरंतर कार्य में लगा रहता है तो वह सफलता को प्राप्त कर लेता है।

गधे का भोलापन एवं कड़ा परिश्रम

'गधा' एक ऐसा शब्द है, जिसे मनुष्य जाति के लोग मूर्ख, भोले एवं अपने शत्रु पक्ष के लोगों के लिए अकसर प्रयोग करते हैं। मनुष्य जाति भी विचित्र है। यदि उन्हें 'गधा' कहकर संबोधित किया जाए तो वे क्रोध से भर उठते हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि गधा एक ऐसा भोला घोड़े की प्रजाति का पशु है, जो बिना थके परिश्रम करता है। अपने वजन से कई गुना वजन उठाता है और हर स्थिति में संतोष एवं धैर्य बनाए रखता है। गधा जितनी मेहनत करता है, वास्तविक जीवन में कई व्यक्ति उसकी 10 प्रतिशत मेहनत भी नहीं करते हैं। फिर भी वे गधे के संबोधन से चिढ़ते हैं। यह एक सदियों पुरानी मान्यता चली आ रही है। वरना सोच-विचार करने पर आप यही पाएँगे कि गधे जितना सहज, संतुलित एवं परिश्रमी यदि मनुष्य हो जाए तो न केवल मनुष्य की व्यक्तिगत प्रगति बढ़ जाए, अपितु देश की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रगति का ग्राफ भी बहुत ऊपर उठ जाए। सर्वाधिक प्रखर कूटनीतिज्ञ चाणक्य ने गधे से लेकर हर वस्तु तक की बारीकी और गुण को परखा और उन्हें हर व्यक्ति को अपनाने के लिए कहा। उन्होंने अपने शिष्य चंद्रगुप्त को साधारण से एक असाधारण राजा में परिवर्तित कर दिया था। चंद्रगुप्त मौर्य को उन्होंने शिक्षा के साथ-साथ हर शिक्षा का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया। उन्होंने चंद्रगुप्त को पशु-पक्षियों से सीखने के लिए प्रेरित किया।

आधुनिक समय में मनुष्य जगत् में संतोष एवं धैर्य, दोनों ही विलुप्त होते जा रहे हैं। यही कारण है कि आज पहले से अधिक अपराध, भ्रष्टाचार, हिंसा का विस्तारण होता जा रहा है। लोगों में असंतोष व्याप्त होने के कारण छोटी-छोटी बातें बड़े एवं विकराल झगड़ों का रूप ले लेती हैं। ये झगड़े हिंसा एवं अनावश्यक मृत्यु तक का कारण बन जाते हैं।

श्वान-सी विश्वसनीयता लाएँ

श्वान, यानी कि कुत्ता भेड़िया कुल की प्रजाति का प्राणी है। यह मनुष्य का मुख्य पालतू पशु है। आज तो यह मानव जीवन और परिवारों का एक मुख्य हिस्सा बन चुका है। श्वान की ग्रहणशीलता एवं सुनने की क्षमता बेहद शक्तिशाली होती है। श्वान 35 हजार कंपन प्रति सेकंडवाली आवाजें भी सुन सकता है, जबकि सामान्य व्यक्ति केवल 20 हजार कंपन प्रति सेकंडवाली ध्वनियों को ही सुन सकता है। आज श्वान केवल व्यक्तियों के घरों में रहकर ही उनकी सुरक्षा नहीं करता है अपितु वह सैन्य तरीके से सुरक्षा करने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। श्वानों को बाकायदा प्रशिक्षण प्रदान कर सुरक्षा घेरे की जानकारी लेने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। मनुष्य एक ऐसा प्राणी है, जो समयानुरूप अपने स्वभाव को परिवर्तित कर सकता है। वहीं श्वान एक बेहद ईमानदार एवं स्वामिभक्त पशु है। यह मरते दम तक अपनी विश्वसनीयता बनाए रखता है। श्वान आँखें देखकर ही व्यक्ति के हाव-भावों से परिचित हो जाता है। यह बात समझ से परे है कि क्यों मनुष्य ने 'कुत्ते' शब्द को भी अमर्यादित कर उसे अभद्रतासूचक श्रेणी में डाल दिया है। चाणक्य तो इस बात पर बल देते हैं कि यदि व्यक्तियों के अंदर श्वान के गुण आ जाएँ और वे श्वान से शिक्षा लें तो अपने जीवन को सफल एवं कामयाबी के शिखर पर स्थापित कर सकते हैं। श्वान की स्वामिभक्ति की अनेक सत्य कहानियाँ एवं किस्से जगह-जगह पर बिखरे पड़े हैं। हैरत की बात यह है कि ये किस्से जितने पुराने हैं, उतने ही नए भी हैं, अर्थात् आज भी श्वान उतने ही विश्वसनीय, स्वामिभक्त एवं ईमानदार हैं, जितने सदियों पहले होते थे, जबकि व्यक्ति परिस्थितियों के अनुसार गिरगिट की तरह रंग बदलने में कुछ सेकंड

भी नहीं लगाता। चाणक्य की कुशलता, गहनता और कार्यशैली ने केवल भारत का ही इतिहास नहीं बदल दिया था, अपितु अपने वचनों, लेखन एवं शैली से विश्व को भी समृद्ध एवं संपन्न कर दिया था। आज चाणक्य के अर्थशास्त्र की नीतियों को ही तोड़-मरोड़कर देश अपनी कार्यशैली में प्रयोग करते हैं और सफलता पाते हैं। यदि व्यक्ति चाणक्य की नीतियों एवं ज्ञान को समझकर अपने जीवन में प्रयुक्त करे और जीव-जंतुओं के कुछ गुणों का सम्मिश्रण अपने व्यक्तित्व में कर ले तो उसके व्यक्तित्व की सुगंध चंदन की भाँति चहुँ ओर फैल जाती है और उसकी कीर्ति के गीत गुनगुनाती है।

चाणक्य शिक्षा

चाणक्य ने अपने संपूर्ण जीवन को मनुष्य एवं जीव जगत् की कार्यविधियों, शैलियों एवं ज्ञानार्जन पर ही लगाया था। मनुष्यों के अलावा उन्होंने जीव-जंतुओं से भी मानव को शिक्षा ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया है। चींटी, तितली, कौआ, गधा एवं श्वान जीव-जंतु जगत् के ऐसे प्राणी हैं, जो अपने जीवन से तो विश्व के सामने मिसाल प्रस्तुत करते ही हैं, इसके साथ ही वे जीवन में मनुष्य के लिए बेहद उपयोगी भी होते हैं।

□

चाणक्य के नजरिए से बच्चों का विकास

आचार्य वचन

• एक कुम्हार चाक पर घूमते मिट्टी के लोंदे को कभी प्यार से थपथपाकर, कभी सहलाकर तो कभी पीटकर उसे एक सुंदर बरतन का आकार दे देता है। बाद में वही बरतन अपनी सुंदरता से लोगों को आकर्षित करता है। माता-पिता को कुम्हार की भाँति मिट्टीरूपी संतान का पालन-पोषण करना चाहिए।

• पिता अपनी संतान का पाँच वर्ष तक लाड़-प्यार के साथ पालन-पोषण करें। इसके बाद अगले दस साल तक उस पर सख्ती रखें। संतान जब सोलह वर्ष की हो जाए तो उसके साथ मित्रवत् व्यवहार करें।

बाल मन की गुत्थी

चाणक्य जैसे व्यक्तित्व ने आज से हजारों वर्ष पहले बच्चों, महिलाओं, पुरुषों, राजाओं, सैनिकों, गुरुओं और जीव-जंतुओं तक के जीवन का बारीकी से अध्ययन किया था। यही कारण था कि उन्होंने चंद्रगुप्त जैसे साधारण बालक को भारत के एक असाधारण सम्राट् में परिवर्तित कर दिया था। बचपन मनुष्य के जीवन की स्वर्णिम अवस्था है। यह वह अवस्था है, जब व्यक्ति जादू को रोमांच से देखता है। वह हर वस्तु में जादू तलाश करता है। रंग-बिरंगी तितलियाँ, रंग-बिरंगे पुष्प, नदी की कल-कल धारा, पहाड़ियों के नीचे से उगता दिनकर सब बच्चों को रोमांचित करता है। जादूगर अपने हाथ की सफाई से जादू दिखाकर बच्चों को मोहित कर देते हैं। जब 25 दिसंबर आनेवाला होता है तो तीन साल से लेकर छह साल तक की आयु के बच्चे बेसब्री से सांता क्लॉज का इंतजार करते हैं और अपने मनपसंद तोहफों की फरमाइश भी। अगले दिन घर के किसी कोने में या बिस्तर पर अपने मनपसंद तोहफे को प्राप्त कर उनके चेहरे की खुशी और चमक सूर्य की किरणों के साथ चमककर और निखर उठती है। कहानियों में परियों का जीवन, इच्छाओं का पूर्ण होना और कामयाबी का शिखर सब सच लगता है और हर बच्चा उस शिखर को पाने के लिए लालायित रहता है, लेकिन जैसे-जैसे बच्चे का विकास होता है तो उसके बाल मन की गुत्थियाँ उलझती जाती हैं। कहानियों में, पुस्तकों में उसने खूबसूरत एवं रोमांचक जीवन की झलक पाई होती है और वास्तविकता में माता-पिता की डाँट, शिक्षकों की फटकार और साथियों के व्यंग्य बाण उन्हें आहत कर देते हैं। ये सब देखकर बाल मन की गुत्थियाँ इतनी उलझती जाती हैं कि बच्चों का मस्तिष्क विचलित हो जाता है और कई बार तो पटरी पर से ही उतर जाता है।

चाणक्य बचपन से ही बच्चों के बाल मन की गुत्थी को सुलझाने के लिए इस बात पर बल देते हैं कि बच्चों के सामने तसवीरों का प्रस्तुतीकरण सशक्त होना चाहिए। एक तसवीर सौ शब्दों से अधिक प्रभावशाली होती है।

बचपन की कुछ गलत तसवीरें

• कुछ माता-पिता आज भी अपने बच्चों को बचपन में पीटना इसलिए जरूरी समझते हैं, क्योंकि उन्होंने अपने बचपन में माता-पिता से पिटाई खाई थी। अपनी पिटाई के द्वारा यह तसवीर बचपन से ही उनके मानस पटल पर अंकित हो गई थी कि पिटने से ही बच्चे अनुशासन में रहते हैं।

• वे पुरुष, जो महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार करते हैं, इसके पीछे भी उनके बचपन की गलत तसवीर का ही हाथ होता है। उन्होंने अपने बचपन में अपने पिता को माता पर हाथ उठाते, उनके साथ अभद्रतापूर्ण तरीके से पेश आते हुए देखा होता है। इसलिए यह तसवीर उनके अवचेतन मन में बैठ जाती है। अधिकांश महिलाओं के साथ होनेवाली हिंसक घटनाओं के पीछे यही बात होती है।

• भारत एक पुरुष प्रधान देश है। इसलिए आज भी अधिकतर पुरुष स्वयं को सर्वेसर्वा समझते हैं। विवाह होने पर वे अपनी पत्नी को जीवनसाथी के बजाय दोयम दर्जे पर रखते हैं और उसकी राय, इच्छा एवं कार्यों को कतई महत्त्व नहीं देते। परिणामस्वरूप आज आए दिन तलाक, आत्महत्या आदि की घटनाएँ आम होती जा रही हैं। पत्नियों को प्रताड़ित करना, स्त्रियों की बात एवं स्थिति को मुख्य न समझना, ये सब बातें बच्चे बचपन से ही सीखते हैं।

• माता-पिता अकसर किसी अतिथि को टालने के लिए अपने बच्चे के माध्यम से कहलवा देते हैं कि वे घर पर नहीं हैं, अथवा किसी कार्य में व्यस्त हैं। बच्चा अपने माता-पिता के एवज में यह बात अतिथि से कह तो देता है,

लेकिन साथ ही इस बात को अपने अवचेतन मन में भी बैठा लेता है कि ऐसे झूठ झूठ नहीं होते। बड़ा होने पर वह भी यही सब दोहराता है।

• कक्षा में नंबर कम आने पर माता-पिता अपने बच्चे को प्रताड़ित करते हैं और उसे अधिक नंबर लाने के लिए महँगे-महँगे उपहार का प्रलोभन देते हैं। बड़ा होने पर बच्चा अपने बच्चों के साथ भी ऐसे ही हथकंडे अपनाता है। इतना ही नहीं, बच्चों को लगने लगता है कि महँगे उपहार उन्हें केवल तभी मिल सकते हैं, जब वे दूसरों की इच्छाओं को पूरा करें। यह बहुत ही गलत अवधारणा है।

चाणक्य बेहद विद्वान् थे। उन्होंने केवल ग्रंथों को ही नहीं पढ़ा था, बल्कि लोगों को भी पढ़ा था। वे कहते थे—उत्तम स्वभाव व उत्तम आचरण ही मनुष्य का प्रमुख गुण है। जिस व्यक्ति का शील नष्ट हो जाता है, धन, जीवन और रिश्तेदार उसके किसी काम के नहीं रहते। इसलिए बच्चों के अंदर बचपन से ही उत्तम स्वभाव एवं उत्तम आचरण का विकास होना अनिवार्य है। यदि माता-पिता का स्वयं का जीवन पीड़ादायक रहा है तो भी उन्हें अपने बच्चों के सामने आदर्श बनने का प्रयत्न करना चाहिए।

बच्चे का पहला आदर्श माता-पिता

माता-पिता का स्वरूप एवं व्यवहार जैसा भी हो, लेकिन वह बच्चे के लिए आदर्श होता है। माता-पिता बच्चे के जीवन की पहली पाठशाला होते हैं। आँखें खोलते ही बच्चा अपने माता-पिता को अपने पालक के रूप के पाता है और बड़ा होते उनका अनुकरण करने लगता है। बच्चे को नकल के लिए वानर की संज्ञा दी जाती है। वानर नकल करने में माहिर होता है। इसी तरह बच्चा हर कार्य एवं शैली को परिवेश एवं वातावरण के अनुरूप ग्रहण करता है। वह अपने माता-पिता के कार्य व्यवहार, शिक्षा आदि को ग्रहण करता है। बचपन में बच्चा अपने माता-पिता को हर लिहाज से सर्वश्रेष्ठ समझता है। यदि वे अनुचित कार्य व्यवहार करते हैं तो बालक उन्हें सही समझता है और उसके मस्तिष्क में ये बातें गहराई तक चली जाती हैं कि माता-पिता के द्वारा किए जानेवाले सभी कार्य सही हैं। इसलिए सदैव बच्चों के सामने एक आदर्श बनकर ही कार्य करने चाहिए। अच्छे माता-पिता बनने के लिए व्यक्तियों को अपनी बहुत सारी इच्छाओं का त्याग करना पड़ता है। चाणक्य तो गृहस्थ जीवन को एक बहुत महत्त्वपूर्ण और बड़ी जिम्मेदारी मानते हैं और यही कहते हैं कि हर जीवन को पूर्ण ईमानदारी एवं सत्यनिष्ठा के साथ निभाना चाहिए। माता-पिता का स्थान ईश्वर एवं गुरु से भी बड़ा इसलिए कहा गया है, क्योंकि उन्हें अपना सर्वस्व समर्पण करके भी बच्चे के अंदर अच्छे संस्कार डालने चाहिए।

व्यावहारिक शिक्षा अनिवार्य

बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा एवं पुस्तकों के अतिरिक्त व्यावहारिक शिक्षा बेहद अनिवार्य है। इसके लिए बच्चों को समय-समय पर व्यावहारिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए। चाणक्य अकसर अपने शिष्यों को दैनिक कार्यकलाप करते हुए व्यावहारिक शिक्षा देना नहीं भूलते थे। उन्होंने चंद्रगुप्त को बारंबार व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया था। चंद्रगुप्त मौर्य बेहद होनहार थे। चाणक्य उन्हें बेहद पसंद करते थे, यह बात भी उन्हें ज्ञात थी। इसलिए अकसर वे कई बार स्वयं को सर्वगुण संपन्न समझने की भूल कर बैठते थे और जल्दबाजी में ही अपने निर्णयों को सही समझ लेते थे। एक दिन चंद्रगुप्त मौर्य ने अपने शत्रुओं पर हमला करने की रणनीति बनाई। इस रणनीति के तहत उन्होंने सीधे शत्रु दल पर आक्रमण की योजना बनाई। चाणक्य को जब यह पता लगा तो उन्होंने उन्हें व्यावहारिक शिक्षा देने का निश्चय किया। उन्होंने चंद्रगुप्त को रात के भोजन पर बुलवाया और उनके लिए भात तैयार करवाया। भात तैयार होने के बाद चंद्रगुप्त की थाली में गरम-गरम भात परोसा गया। चंद्रगुप्त जब भोजन करने लगे तो चाणक्य बोले, "ठहरो।" फिर वे थाली की ओर संकेत करके बोले, "कल्पना करो कि यह लड़ाई का मैदान है, ये चावल शत्रुओं की सेना है।" यह सुनते ही चंद्रगुप्त समझ गए कि अब उन्हें व्यावहारिक ज्ञान प्रदान किया जानेवाला है। उन्होंने जवाब दिया, "जी गुरुजी, कल्पना कर ली कि ये चावल शत्रुओं की सेना है और थाली शत्रुओं का किला।"

यह सुनकर चाणक्य बोले, "शाबाश! अब यह बताओ कि तुम्हारे हिसाब से शत्रु राजा को कहाँ होना चाहिए?" चाणक्य कुछ देर विचार करके बोले, "गुरुजी, मेरे हिसाब से शत्रु राजा को थाली के बीच में होना चाहिए।"

"क्यों?" चाणक्य ने कहा।

"इसलिए कि उसे चारों ओर से सुरक्षा मिल सके।"

जवाब सुनकर चाणक्य प्रसन्न होकर बोले, "बहुत खूब, तो तुम राजा को मार कर लड़ाई सहजता से जीत सकते हो।"

"जी गुरुजी! इसलिए मैं सीधा राजा पर हमला करके उसे परास्त कर दूँगा।" यह बात सुनकर चाणक्य शंकित होकर बोले, "अपनी इस रणनीति को इस थाली में कर के दिखाओ।" यह सुनकर चंद्रगुप्त ने तुरंत अपना हाथ

भात के बीच में डाल दिया। अचानक गरम भात से उनकी अंगुलियाँ जल गईं और उन्होंने चीखकर अपना हाथ बाहर खींच लिया।

यह देखकर चाणक्य बोले, "तुम्हें क्या लगता है कि अपने राज्य में चारों ओर से सुरक्षित राजा पर सीधा हमला करना क्या सहज होगा?"

चंद्रगुप्त को अपनी भूल समझ में आ गई। वे बोले, "आचार्य, ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए?"

"ऐसी स्थिति में तुम्हें सेना को किनारों से समाप्त करना होगा। वह सीमाओं पर कमजोर होती है और आसानी से काबू में आ जाती है। इस तरह पूरी तरह से सुरक्षित राज्य पर हमला करने के बजाय उसकी सीमाओं पर धावा बोलना चाहिए।"

चंद्रगुप्त ने थाली के किनारे के चावलों में हाथ डाला तो वे पहले की अपेक्षा कम गरम थे। उसने सहजता से वहाँ के भात को खा लिया। इस तरह जब वे बीच के भातवाले हिस्से पर पहुँचे, तब तक वह भी ठंडा हो चुका था।

इस व्यावहारिक सरल ज्ञान से चंद्रगुप्त ने युद्ध कला का एक महत्त्वपूर्ण पाठ सीख लिया था। चंद्रगुप्त ने अपने गुरु चाणक्य का अभिनंदन किया और उन्हें धन्यवाद दिया कि बड़ी सरलता से गुरु ने उन्हें शत्रु से निबटने का तरीका समझा दिया था।

चाणक्य दैनिक कार्यकलापों, यहाँ तक कि भोजन के माध्यम से भी चंद्रगुप्त को व्यावहारिक शिक्षा का ज्ञान प्रदान करते थे। बच्चे का सर्वांगीण विकास तभी होता है, जब उसे व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त होता है।

बच्चों पर गंभीरता से ध्यान देना अनिवार्य

माता-पिता दोनों के सेवारत होने से वे बच्चे पर कम ध्यान दे पाते हैं। ऐसे में बच्चा स्वयं को विमुख समझने लगता है। कई बार केवल माता-पिता का ध्यानाकर्षण पाने के लिए वह शरारतें करता है, गलत कार्य करता है और स्कूल में मारपीट करता है, ताकि माता-पिता तक उसकी बातें पहुँचें और वे उस पर ध्यान दें। माता-पिता का पहला कर्तव्य यही है कि अत्यंत व्यस्त होने पर भी बच्चे पर से ध्यान न हटाएँ। थोड़ी सी समझदारी और चतुराई से समय प्रबंधन करके इस समस्या को हल किया जा सकता है।

- बच्चे के साथ एक समय का भोजन अवश्य करें।
- पाँच या दस मिनट के लिए ही सही, लेकिन उससे यह प्रतिदिन पूछें कि आज का दिन कैसा रहा? स्कूल में क्या विशेष हुआ, आदि।
- अगर बच्चा ट्यूशन भी जाता है तो भी एक बार उसकी कॉपी-किताबों की जाँच अवश्य करें। ऐसा करने से बच्चे को एहसास होता है कि माता-पिता को उसकी परवाह है।
- बचपन से बच्चे को रात में पुस्तक पढ़ने की आदत डालें।

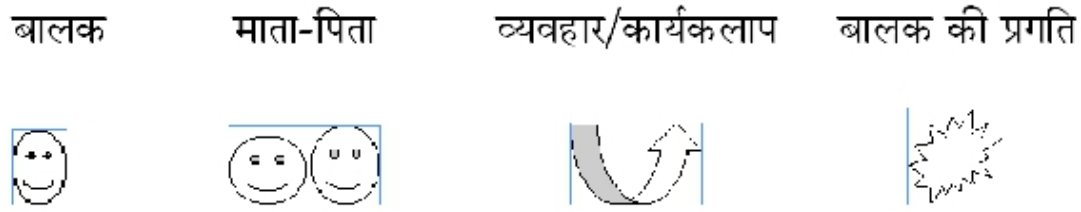

चाणक्य शिक्षा

चाणक्य ने शिक्षा को प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य बताया। उनका कहना था कि बचपन बेहद भोला होता है। बचपन सदैव माता-पिता का अनुकरण करता है। इसलिए प्रत्येक माता-पिता को अपने बच्चे के सामने सदैव सत्यनिष्ठा, अहिंसा, प्रेम और करुणा के मार्ग पर चलना सिखाना चाहिए। ऐसा तभी संभव है, जब माता-पिता स्वयं ऐसे मार्ग पर चलते हों। यदि माता-पिता सकारात्मक एवं बच्चों के प्रति आशावान होते हैं, तभी वे अपने बच्चों को अच्छा नागरिक बना सकते हैं। बच्चों के सामने भूलकर भी हिंसा, झूठ एवं अकर्मण्यता का प्रदर्शन नहीं करना चाहिए। बच्चे कल के नेता होते हैं। देश के सुनहरे भविष्य को तैयार करने के लिए यह अनिवार्य है कि बच्चों को आज सुनहरा वर्तमान और सकारात्मक परिवेश मिले।

□

समृद्धि को जान, खूब करें दान

आचार्य वचन

- जो व्यक्ति निर्धन होने पर भी दानशील हो, उसे स्वर्ग से भी ऊपर स्थान प्राप्त होता है।
- योग्य व्यक्ति को दिया गया दान सहस्त्र गुना होकर वापस मिलता है।
- दान कभी व्यर्थ नहीं जाता है। दस गुना अधिक होकर पुन: प्राप्त हो जाता है।
- अपनी विद्वत्ता को सार्थक बनाए रखने के लिए मनुष्य को यथासंभव दान करते रहना चाहिए। इससे लोक और परलोक में उसका भला होता है।

दान देने से धन कभी नहीं घटता

चाणक्य ने अपने जीवन में अच्छे, बुरे और बहुत बुरे समय को देखा था। जीवन के हर पड़ाव एवं संघर्ष ने उन्हें व्यावहारिक बना दिया था। वे अकसर अपनी माता को साधु-संतों को दान करते देखते थे। एक दिन जब उनकी माता किसी जरूरतमंद को दान दे रही थी तो चाणक्य ने बालसुलभ प्रश्न किया, "माता, यह तो हमारी वस्तु है। आप इसे दूसरे व्यक्ति को क्यों प्रदान कर रही हैं? ऐसा करने से तो हमारे पास इस वस्तु की कमी हो जाएगी।" यह सुनकर माता ने मुसकराते हुए चाणक्य को गोद में उठाया और कहा, "पुत्र, यह बात सदैव याद रखना कि दान देने से कभी वस्तु कम नहीं होती, बल्कि यह संपन्नता की निशानी होती है। यदि व्यक्ति दान देने की स्थिति में न हो, तब भी उसे मन, वचन एवं कर्म से दान देने का प्रयत्न करना चाहिए। दान देने से व्यक्ति अपने कर्म एवं वचन के प्रति प्रयत्नशील होता है और मेहनत से काम करता है।" यह बात नन्हे से चाणक्य के मन में घर कर गई। अपने विद्यार्थी जीवन में वे प्रारंभ से ही बेहद प्रतिभाशाली थे। सभी सहपाठी उनसे विद्या दान लेते थे। चाणक्य भी मुक्त हस्त से विद्या दान करते थे। विद्या के अतिरिक्त वे जरूतमंद व्यक्तियों की हरसंभव मदद करते थे। बड़े होते-होते चाणक्य समझ गए थे कि उनकी माता के द्वारा कहे गए वचन सत्य थे। वे दान की महिमा को समझ गए थे। जो व्यक्ति निस्स्वार्थ भाव से अपनी योग्यता के अनुरूप दान करता है, वही हमेशा पुण्य पाता है।

दान की वैज्ञानिक अवधारणा

चाणक्य ने हजारों वर्ष पहले दान की धारणा को वैज्ञानिक अवधारणा से जोड़कर यह प्रमाणित कर दिया था कि हर क्रिया की हमेशा विपरीत और समान प्रतिक्रिया होती है। यदि एक व्यक्ति सहज भाव से किसी की मदद करता है, सरलता से दान देता है तो कभी-न-कभी उसे कई गुना ब्याज समेत वापस प्राप्त हो जाता है। स्वयं ही संग्रहण की प्रवृत्ति व्यक्ति को अकेला छोड़ देती है, जबकि जो व्यक्ति कम सुविधाएँ होते हुए भी दान की भावना से अभिभूत रहता है, वह जीवन में सदैव सफल होता है। चाणक्य कहते थे कि प्रकृति जीव एवं प्राणियों से मिलकर ही बनी है। सभी एक-दूसरे पर निर्भर हैं। इसलिए उन्हें अपनी दान की प्रवृत्ति सदैव बनाकर रखनी चाहिए। यदि व्यक्ति व प्रकृति दान नहीं करते हैं तो उनके पास संचित वस्तु नष्ट ही हो जाती है। यदि पेड़ प्राणियों को आश्रय न दें, छाँव न दें, फल और फूल न दें तो भी उन्हें नष्ट ही हो जाना है। पेड़ व्यक्तियों को छाँव, फल और फूल प्रदान कर अपनी उपस्थिति और महत्त्व को बढ़ाते हैं। वास्तव में दान देने से व्यक्ति न ही घटता है और न ही उसका धन कम होता है, बल्कि वास्तविकता में दानी प्रवृत्ति का व्यक्ति अपने इसी गुण के कारण प्रसिद्धि पाता है, मगर दान सात्त्विक होना चाहिए। उसमें छल, कपट और लालच जैसे दुर्गुण नहीं आने चाहिए। इनका समावेश होने से दान का स्वयं का महत्त्व खत्म हो जाता है, चाणक्य ने दान की प्रवृत्ति को समझने के लिए स्वयं अनेक शोध किए। उन्होंने देखा कि मधुमक्खी किस तरह और कितने संघर्ष के साथ मधु का निर्माण करती है। मधु, यानी कि शहद बेहद कीमती और गुणकारी होता है। मधुमक्खियाँ मिलकर मधु का निर्माण करती हैं। जब मधु बन जाता है तो व्यक्ति अनेक तरह से मधुमक्खियों से उस मधु को प्राप्त कर लेता है। यदि मधुमक्खियाँ अपने मधु को दान न करें तो भी मधु नष्ट हो जाता है। मधुमक्खियों के द्वारा बनाए गए मधु को प्राप्त कर लोग उसका प्रयोग औषधियों व भोजन में करते हैं। शहद बेहद गुणकारी होता है। मधुमक्खियाँ शहद के कारण ही अपने अस्तित्व को महत्त्वपूर्ण बना पाती हैं। इसलिए अभाव के समय भी दान की प्रवृत्ति को सहेजकर रखना चाहिए।

चाणक्य ने तो अपना संपूर्ण जीवन ही देश सेवा के साथ दूसरों को सँवारने में लगा दिया था। वे मानते थे कि आत्मकेंद्रित जीवन खोखला होता है। व्यक्ति को अपने जीवन में ऐसे उद्देश्य बनाने चाहिए, जिससे कि वह देश का कल्याण कर सके। चाणक्य बेहद प्रतिभाशाली थे। वे चाहते तो स्वयं ही राजा बन सकते थे, लेकिन उनका कहना था कि वे राजनिर्माता बनकर देश का अधिक कल्याण कर पाएँगे और उन्होंने वही किया। चाणक्य ने अपने मस्तिष्क और बुद्धि के मिश्रण से अनेक लोगों को पराजित किया। कइयों को दान मार्ग पर चलना सिखाया और कइयों को जीवन की दिशा दिखाई। वे समय-समय पर साधारण लोगों को भी पाठ पढ़ाने से नहीं चूकते थे।

व्यक्ति की शोभा

दान देने से व्यक्ति कुछ खोता नहीं है, बल्कि बहुत कुछ प्राप्त करता है। सबसे पहले उसे आत्मसंतुष्टि का बोध होता है। दान की भावना व्यक्ति को शारीरिक एवं मानसिक रूप से तुष्ट करती है। जो व्यक्ति दान देने में

संकोच करते थे, चाणक्य उन्हें दान की महिमा बताना नहीं भूलते थे। एक बार चाणक्य मार्ग में जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने देखा कि एक स्वामिनी अपने पति को दान देने से मना कर रही थी। स्वामिनी के पति ने एक अनाथ बालक को शिक्षित करने के लिए दान का संकल्प किया था। जब स्वामिनी को यह ज्ञात हुआ तो वह बोली, "मैं आपको बहुत दिनों से हाथों के कंगन बनवाने के लिए कह रही हूँ, लेकिन आप हर बार यह कहकर मना कर देते हैं कि अभी धनराशि नहीं है। जब आपके पास धनराशि नहीं है तो फिर एक अनाथ बालक की शिक्षा के दान का संकल्प क्यों कर बैठे?" यह सुनकर पति ने कहा, "शिक्षा बालक का अधिकार है। ऐसे में एक अनाथ बालक की शिक्षा के लिए दान से श्रेष्ठ मुझे आभूषण नहीं लगते।" पति की इस बात पर स्वामिनी नाराज होकर बैठ गई। चाणक्य उनके समीप आकर बोले, "बेटा, तुम बहुत समझदार हो। तुम बिल्कुल सही कहते हो कि अनाथ बालक को दान देना सबसे अच्छा कार्य है। इससे तुम्हें किसी वस्तु की कमी नहीं होगी, बल्कि एक अनाथ की मदद करने से तुम्हें मानसिक संतुष्टि का बोध होगा।" पति यह सुनकर मुसकरा दिया और चाणक्य के आगे नम्रतापूर्वक बोला, "मैं ऐसा ही करूँगा।" फिर चाणक्य स्वामिनी से बोले, "पुत्री, तुम बेहद भाग्यशाली हो, जो तुम्हें दानी पति मिला है। एक बात सदैव स्मरण रखना कि हाथ की शोभा आभूषण या कंगन आदि धारण करने से नहीं, अपितु दान देने से बढ़ती है। जब मनुष्य जरूरतमंद को दान करता है तो उसके हाथों की शोभा दान के आभूषण से निखर उठती है। मैं यह नहीं कहता कि कुपात्र को दान दो या हर किसी को दान दो, लेकिन जरूरतमंद को अवश्य दान देना चाहिए।" चाणक्य की बात सुनकर स्वामिनी भी दान का महत्त्व समझ गई।

दान की महिमा

दान कई बार सुपात्र तक पहुँचने के बाद दान प्राप्त करनेवाले व्यक्ति के जीवन को परिवर्तित कर देता है। ऐसे में दान की महिमा विश्वव्यापी हो जाती है। दान बूमरैंग की तरह ही होता है, जो कई गुना होकर वापस दानी के पात्र में आ जाता है। एक बार एक महिला ने अनजान बच्चे को भूख-प्यास से व्याकुल देख अपने हिस्से का गिलास भरा दूध उसे दे दिया। कई वर्ष बीत जाने पर महिला बीमारी से ग्रस्त होकर सड़क पर गिर गई। उसे अस्पताल पहुँचाया गया। वहाँ पर उसकी बीमारी को दूर करने में पाँच लाख का खर्च आया। होश में आने पर जब यह बात महिला को पता चली तो उसके होश उड़ गए। उसके पास तो फूटी कौड़ी नहीं थी। कैश काउंटर पर उसे पता चला कि उसका बिल दे दिया गया है। महिला ने इच्छा जताई कि उसका बिल किसने दिया तो एक युवक डॉक्टर की पोशाक में आकर बोला, "मैंने, लेकिन यकीन मानिए, यह रुपया आज भी उस दूध के गिलास की कीमत नहीं चुका सकता, जो आपने मुझे उस समय दिया था, जब मैं भूख-प्यास से बिलख रहा था।" यह सुनकर महिला की आँखें भी नम हो गईं।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी हैसियत एवं काबिलीयत के अनुरूप दान कर सकता है। अशिक्षित को शिक्षित कराना, भूखे को भोजन कराना, निर्धन को वस्त्र देना एवं निर्धन बच्चों को कॉपी-पेंसिल देना दान का ही स्वरूप है।

सुपात्र को दान करें, कुपात्र को नहीं

चाणक्य का मानना था कि अपनी-अपनी हैसियत के अनुरूप प्रत्येक व्यक्ति और प्राणी को दान करना चाहिए। यही सच्चा धर्म है। ईश्वर एक है और ईश्वर व्यक्ति को नेक, सदाचारी रूप में देखना चाहता है। जब व्यक्ति हिंसा और अनैतिकता के मार्ग पर चलता है तो समाज में अराजकता फैल जाती है। यही अराजकता संपूर्ण परिवेश को बिगाड़ती है। जब व्यक्ति दान देने में संकुचन लाते हैं तो वस्तुओं के अभाव में लोगों में छीना-झपटी की स्थिति उत्पन्न होती है। छीना-झपटी में व्यक्तियों के साथ ही वस्तुओं का भी ह्रास होता है। कई बार तो व्यक्तियों को जान-माल का भी नुकसान होता है, वहीं अपने-अपने हिसाब से दान करने से अशक्त व्यक्तियों को मदद मिलती है। दान सभी व्यक्ति करें, मगर हाँ, दान सदैव सही व्यक्ति को ही करें। कई बार कुपात्र को भी दान देने से अनेक मुश्किलें एवं संकट उत्पन्न हो जाते हैं। कुपात्र को दिया जानेवाला दान अर्थहीन होता है। इसलिए चाणक्य ने अपनी कूटनीति के अनुसार यह भी घोषित किया हुआ था कि सब दान करें, लेकिन कुपात्र को दान देने से बचें।

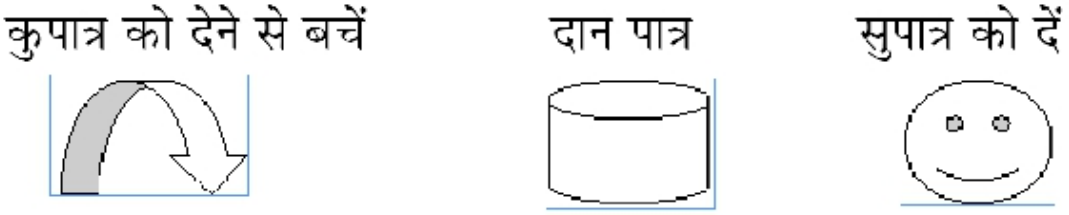

चाणक्य शिक्षा

चाणक्य ने दान को प्रत्येक व्यक्ति को अपनी अपनी हैसियत से देने पर जोर दिया है। दान व्यक्ति की समृद्धि का द्योतक होता है। यदि व्यक्ति कमजोर स्थिति में भी निस्स्वार्थ भाव से दान देने की हैसियत रखता है तो वह एक सच्चा मनुष्य होता है और स्वर्ग का अधिकारी होता है। संपन्न व्यक्तियों को तो अवश्य ही दान देना चाहिए, क्योंकि मनुष्य की सार्थकता मनुष्यों की मदद करने में ही है। यह सच्ची मनुष्यता है। दान देने से व्यक्ति को ऊँच-नीच का ज्ञान रहता है और वह स्वयं भी नेक मार्ग पर चलता है। ऐसा दान, दान कतई नहीं कहलाता, जिसे व्यक्ति अनैतिक रूप से संचित करता है और फिर उसका कुछ हिस्सा गर्व से दान करता है। मेहनत और संघर्ष से प्राप्त राशि एवं वस्तुओं का दान ही श्रेयस्कर होता है।

□

खेल हैं जीवन के पाठ

आचार्य वचन

- खेल और जीवन आपस में जुड़े हुए हैं।
- जो व्यक्ति कुशलतापूर्वक खेलते हैं, वे जीवन के रण में विजयी होते हैं।
- जीवन एवं खेल की योजना में अधिक भिन्नता नहीं होती।

खेल और जीवन

पृथ्वी पर मानव का आगमन हुए लाखों वर्ष हो चुके हैं। चार्ल्स डार्विन ने 'ओरिजन ऑफ स्पीशीज' नामक पुस्तक में मानव के विकास की प्रक्रिया पर विचार लिखे। ऐसा माना जाता है कि केवल वानर ही मनुष्य के पूर्वजों के समीप आ सकते हैं। जैसे-जैसे मनुष्य और समय का कालचक्र आगे बढ़ता रहा, वैसे-वैसे मनुष्य के मन-मस्तिष्क और व्यक्तित्व का विकास भी होता रहा।

नियोलिथिक काल या नव पाषाण युग मानव प्रौद्योगिकी के विकास की एक अवधि थी। इस युग में जंगली और घरेलू फसलों का उपयोग और पालतू जानवरों का इस्तेमाल किया जाने लगा था। फिर ऐसे ही विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ती रही। भोजन की जरूरत पूरी होने के बाद व्यक्ति ने अपने मनोरंजन के स्रोत खोजने आरंभ कर दिए। मनोरंजन में गाना, बजाना, नृत्य एवं खेलों का समावेश होता गया। खेल परिवेश एवं समाज के अनुरूप बनते गए और लोग इन खेलों को खेलने लगे। आज तो क्रिकेट, फुटबॉल, वॉलीबॉल, टेनिस, बैडमिंटन, कुश्ती, बॉक्सिंग आदि के अलावा इनडोर भी इतने अधिक खेल हैं कि व्यक्ति फुरसत के समय में उनके माध्यम से अपना मनोरंजन कर सकता है। इतना ही नहीं, आधुनिक गेजेट्स ने मोबाइल के माध्यम से इतने आकर्षक खेलों का निर्माण कर दिया है कि व्यक्ति समय मिलने पर उनके माध्यम से अपना मनोरंजन कर सकता है। खेल और जीवन आपस में जुड़े हुए हैं। जिस तरह व्यक्ति का जीवन एक खेल का मैदान है, उसी तरह खेल जीवन की चुनौतियाँ हैं। खेलरूपी चुनौतियों को, जो व्यक्ति कुशलतापूर्वक खेलते हैं, वे जीवन के रण में विजयी होते हैं और जो चुनौतियों के आगे भय अथवा अन्य कारणों से घुटने टेक देते हैं, वे असफल हो जाते हैं। चाणक्य बेहद कुशल व्यक्तित्व थे। उन्होंने जीवन को खेलों के माध्यम से बहुत पहले ही व्यक्ति से जोड़ दिया था। इतना ही नहीं, उन्होंने अपनी बुद्धि से एक ऐसे खेल का निर्माण किया, जिसे खेलकर युद्ध की बारीकियों को सहजता से समझा जा सकता है।

खेलों के प्रकार

चाणक्य गुरुकुल में सदैव विद्यार्थियों को खेलने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे। जब चंद्रगुप्त अपनी शिक्षा पूरी कर चुके तो एक दिन चाणक्य बोले, "चंद्रगुप्त, तुम्हें राजा बनने के बाद भी खेलने के लिए समय निकालना होगा।" यह सुनकर चंद्रगुप्त हैरानी से बोले, "गुरुजी, भला यह कैसे संभव है? एक राजा खेलते हुए बहुत हास्यास्पद लगेगा।"

"क्यों हास्यास्पद लगेगा? तुम्हें ज्ञात होना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति के लिए खेल अनिवार्य है। खेल कई तरह से खेले जाते हैं। बाहर खेलनेवाले, अंदर खेलने वाले और मानसिक रूप से खेले जानेवाले। ये खेल जीवन के हर क्षेत्र में भी खेले जाते हैं। राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक, प्रत्येक स्तर पर सूझ-बूझ एवं चातुर्य से मस्तिष्क में योजनाओं को खेला जाता है, लेकिन लोग इस बात को समझ नहीं पाते हैं कि जीवन के क्षेत्र में कहाँ, कैसे कदम बढ़ाना है, ये सब बातें मस्तिष्क के अंदर खेल की रणनीतियों से ही आती हैं। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को समय मिलने पर मानसिक खेलों को खेलते रहना चाहिए।"

इन मानसिक खेलों में आज तो अनेक नए-नए खेलों का समावेश हो गया है। शब्द ज्ञान, क्रॉसवर्ड, पहेलियाँ आदि ऐसे ही खेलों के प्रकार हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपनी बुद्धि को विकसित करने के लिए ऐसे खेल खेलते रहना चाहिए।

मानसिक खेलों की बात सुनकर चंद्रगुप्त बोले, "गुरुजी, युद्ध की रणनीति को महल में रहकर ही सुधारा जा सके, क्या कोई ऐसा खेल भी है? यदि है तो बहुत अच्छी बात है और यदि नहीं है तो होना चाहिए।"

चंद्रगुप्त की यह बात सुनकर चाणक्य बोले, "बहुत अच्छा सुझाव है। जल्दी ही ऐसा खेल तुम्हारे सामने होगा, जिसे तुम अपने महल में ही खेल सकोगे और युद्धक्षेत्र की बारीकियों को भी समझ सकोगे।

चतुरंग

चाणक्य का मस्तिष्क चारों दिशाओं में तेजी से दौड़ता था। उन्होंने महल में ही खेले जानेवाले खेल को बनाने की योजना बनाई। इसके लिए उन्होंने युद्धक्षेत्र की बारीकियों को ध्यान से देखा। अपने मस्तिष्क से उन्होंने एक खेल का सृजन किया। वे उसे लेकर चंद्रगुप्त के पास पहुँचे और बोले, "मैंने तुम्हारे लिए एक खेल तैयार किया

है। यह एक युद्ध खेल है। इसकी बारीकियाँ समझकर तुम इस खेल को खेलना सीख जाओगे। जैसे-जैसे तुम इस खेल में पारंगत होते जाओगे, वैसे-वैसे तुम्हारा मस्तिष्क भी तीव्र एवं योजनाबद्ध होता जाएगा। इस खेल में दो खिलाड़ी होंगे और दोनों को एक जैसे अधिकार खेलने के लिए दिए जाएँगे।

चाणक्य की बात सुनकर चंद्रगुप्त बेहद प्रसन्नता से बोले, "गुरुजी, मुझे इस खेल के नियम बताइए।" चाणक्य ने खेल में मोहरे सजाए और बोले, "सेना में चार प्रमुख हिस्से होते हैं—रथ पर सवार लोग, घुड़सवार, हाथी पर सवार लोग और पैदल सेना। सेना के चार अंगों के कारण ही इस खेल को 'चतुरंग' नाम दिया गया है। इसमें दोनों पक्षों के पास रथ, अश्व, हाथियों एवं पैदल सवारों की संख्या बराबर-बराबर रहेगी। यह सुनकर चंद्रगुप्त बोले, "गुरुजी, यदि दोनों ओर सेना बराबर-बराबर रहेगी तो फिर जीत किसकी और कैसे होगी?" यह सुनकर चाणक्य मुसकराए और बोले, "यह तो खेलने के बाद ही पता चलेगा। जो खिलाड़ी बेहतर तौर पर अपनी रणनीतियाँ लागू करेगा, वह जीत जाएगा।" इसके बाद उन्होंने चंद्रगुप्त को खेल के नियम बताने आरंभ किए। खेल के बारे में बताने के बाद चाणक्य बोले, "इस खेल के माध्यम से तुम खाली वक्त में अपने किसी साथी के साथ इस खेल को खेल सकते हो और अपनी युद्ध की रणनीतियों को बेहतर बना सकते हो। यह चतुरंग खेल ही वर्तमान में 'शतरंज' अथवा 'चेस' के नाम से जाना जाता है। भारत के अनेक खिलाड़ियों, जैसे—विश्वनाथन आनंद, कोनेरू हम्पी, तानिया सचदेव, परिमार्जन नेगी एवं गुकेश डी ने इस खेल में भारत का नाम विश्व स्तर पर रोशन किया है।

जीवन में चतुरता

जीवन में ऐसा क्यों होता है कि एक ही जैसे दिखनेवाले लोगों में कुछ दु:खी होते हैं तो कुछ सुखी। एक व्यक्ति बातचीत करने में कुशल होता है तो दूसरे व्यक्ति को स्पष्टीकरण का बोध तक नहीं होता। एक सक्रिय एवं कुशल होता है तो दूसरा आलसी एवं निष्क्रिय। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि लोग चतुराई एवं कुशलता से चलने के लिए योजनाएँ नहीं बनाते हैं, अपने मस्तिष्क का प्रयोग नहीं करते हैं। जो जैसा चल रहा है, उसे वैसे ही रूप में स्वीकार कर लेते हैं। जिस तरह खेल में व्यक्ति को योजनाएँ बनानी होती हैं, उसी तरह जीवन को कुशलतापूर्वक चलाने के लिए भी योजनाएँ बनानी बहुत जरूरी हैं। कुछ लोगों को ऐसा लगता है कि योजनाएँ बनाकर चलना बोझिल एवं उबाऊ लगता है तो उन लोगों को तुरंत ही अपने मनपसंद खेल को अपने मस्तिष्क में स्थापित कर लेना चाहिए और फिर यह सोचना चाहिए कि वे किस तरह से उस खेल को जीतने के लिए प्रयत्न करेंगे। अब इसी बात को जीवन के रणक्षेत्र में उतार लें, अर्थात् अपने लक्ष्य के लिए स्पष्ट कर लें।

यदि आपका लक्ष्य देश के सर्वोच्च अधिकारी का पद प्राप्त करना है तो उसके लिए योजना का खाका बनाएँ।

सप्ताह के पहले दिन से प्रारंभ कर आखिरी दिन तक का चार्ट कागज-कलम से तैयार कर लें। हालाँकि प्रारंभ में इस चार्ट के अनुसार चलने में थोड़ी दिक्कत आ सकती है, लेकिन कुछ दिनों तक इसका पालन करें। जब आप इक्कीस दिनों तक ऐसा कर लेते हैं तो फिर योजना के अनुरूप चलना आपकी आदत में शामिल हो जाता है और आप जीत की ओर अपने कदम बढ़ा चुके होते हैं।

खेल एवं जीवन की योजना में भिन्नता

जीवन एवं खेल की योजना में अधिक भिन्नता नहीं होती है। खेल में जहाँ नियमों का पालन करना होता है, अनुशासनपूर्वक नियमित अभ्यास करना होता है, वहीं जीवन के क्षेत्र में भी गतिविधियों की सूची बनाकर उनका पालन करना होता है। खेल, खेल ही रहता है, बस खेलने का पाला बदल जाता है। खेल में जहाँ पर खेल का पाला निर्धारित क्षेत्र होता है, वहीं जीवन में खेल का पाला पूरा जीवन होता है। इसमें कुशलता एवं योजनाओं के अनुरूप अनुशासनबद्ध तरीके से चला जाए तो व्यक्ति के लिए सफलता प्राप्त करना कतई मुश्किल नहीं होता। ऐसा लगता है कि चाणक्य जैसा कोई और नहीं हो सकता, लेकिन ऐसा नहीं है। स्वयं चाणक्य का यह कहना था कि सद्गुणों से युक्त होने पर व्यक्ति किसी भी क्षेत्र की पराकाष्ठा तक पहुँच सकता है। ध्यान, वचन, कर्म व्यक्ति की सफलता की सीढ़ियाँ हैं। ये सीढ़ियाँ जितनी अधिक मजबूत होंगी, व्यक्ति उतनी ही मजबूती से इन सीढ़ियों पर अपने पैर जमा पाएगा। वहीं यदि सीढ़ियाँ डगमगाएँगी तो व्यक्तियों का भी डगमगाना तय है। इसलिए ध्यान, वचन एवं कर्म से सच्चाई के साथ योजनाएँ बनाएँ और फिर जीवन की डोर पकड़कर आगे बढ़ते जाएँ। यकीन मानिए कि चाणक्य की तरह आपका मस्तिष्क, कौशल एवं बुद्धि भी महान्-से-महान् बल को परास्त कर सकती है।

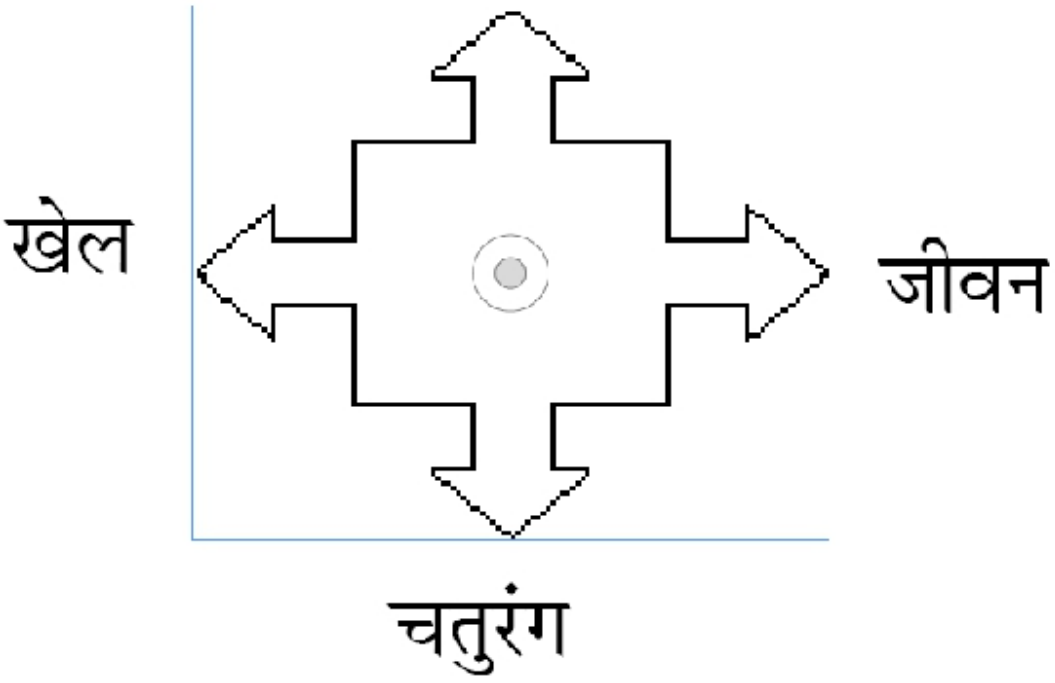

चाणक्य शिक्षा

प्रत्येक व्यक्ति को अपने व्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर खेलों को अवश्य देना चाहिए। ऐसा नहीं है कि केवल बाल्यकाल में ही खेलों में आनंद आता है। जीवन भी एक खेल का मैदान है और इसमें वही व्यक्ति बाजी मारता है, जो खेल को सही ढंग से खेलता है। विभिन्न खेल एवं उनके नियम व्यक्ति को जिंदगी में आगे बढ़ने के लिए परिपक्व बनाते हैं और उन्हें कठिनाइयों से पार पाने के लिए मार्ग बताते हैं। शारीरिक खेलों के अलावा मानसिक एवं बौद्धिक खेलों का भी बहुत महत्त्व है और इन सब खेलों को भी खेलते रहना चाहिए। ये खेल व्यक्ति की मस्तिष्क क्षमता को बढ़ाते हैं और उनके अंदर बुद्धि का विकास करते हैं। व्यक्ति खेल में खेली जानेवाली उलझनों को सुलझाते-सुलझाते जीवन की उलझनों को भी सुलझाना सीख जाते हैं।

समस्याओं से निपटने के उपाय

आचार्य वचन

- धन और स्वास्थ्य मनुष्य के दो सबसे बड़े गुण हैं।
- जो व्यक्ति सावधान, सजग और जागरूक होगा, कोई उसका अहित नहीं कर सकता।
- विशालता पर बुद्धि, चतुराई, ओज और बल द्वारा विजय पाई जा सकती है।
- संकट आने पर मनुष्य किसी भी सीमा को लाँघ सकता है।
- सुसंस्कृत एवं विवेकयुक्त मनुष्य विपरीत परिस्थितियों से लड़ने में सक्षम होने के कारण साहसपूर्वक विषम परिस्थितियों का सामना करते हैं।

समस्याएँ क्या हैं?

लोगों ने अपनी सुविधा के अनुरूप सकारात्मक शब्दों में भी नकारात्मकता खोजकर उन्हें उसी रूप में प्रचलित कर दिया है। इसलिए आज भी जब लोग अपने सामने किसी समस्या को पाते हैं तो अकसर भयभीत होकर जड़ हो जाते हैं। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि बचपन से उनके सामने समस्या की व्याख्या कुछ इस तरह की जाती है, 'ऐसा कार्य, जो असंभव हो।'

'वे स्थितियाँ, जो व्यक्ति को पंगु कर दें।'

'जिनका सामना करने पर व्यक्ति सुध-बुध खो बैठे।'

उपरोक्त बातें समस्याओं के संदर्भ में कही जाती हैं। इसलिए व्यक्तियों के हृदय में बचपन से ही ये बातें बैठ जाती हैं कि समस्याएँ अवरोधक होती हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि समस्याएँ व्यक्ति के जीवन का एक अच्छा लक्षण है। समस्याएँ व्यक्ति को इस बात का एहसास कराती हैं कि व्यक्ति जीवित है। जीवन है, तभी तो समस्याएँ हैं, यदि जीवन ही समाप्त हो जाए तो भला समस्याओं का क्या अस्तित्व है? समस्याएँ दरअसल चुनौतियों का ही स्वरूप हैं। केवल नाम भर बदल देने से लोगों के मस्तिष्क में इनके अर्थ बदल जाते हैं। समस्याएँ जहाँ उन्हें पीड़ादायी प्रतीत होने लगती हैं, वहीं चुनौतियाँ जीवन की प्रगति को प्रगाढ़ करती हैं। समस्याएँ और चुनौतियाँ एक ही अवगुंठन में लिपटी परछाईं हैं, जो अवगुंठन खुलते ही अलग-अलग नजर आने लगती हैं। इसलिए इस बात को अपने अवचेतन में अच्छी तरह बैठा लें कि समस्याएँ कुछ और नहीं, केवल चुनौतियाँ हैं। ऐसी चुनौतियाँ, जो निरंतर लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए अनिवार्य हैं। समस्याएँ आना चिंता का विषय नहीं, बल्कि समस्याएँ न होना चिंतन का विषय अवश्य है। महान् अवसर अकसर समस्याओं के आवरण में ही लिपटे होते हैं। जो लोग समस्याओं का सामना करने से भयभीत होते हैं, वे कभी भी उनके आवरण में प्रच्छन्न महान् अवसरों को जान ही नहीं पाते। चाणक्य ने हजारों वर्षों पहले समस्या का सामना करने के साथ ही उनका हल करने के लिए भी ऐसे उपाय बताए थे, जो आज सदियाँ बीत जाने के बाद भी कारगर हैं और सदियों बाद भी कारगर रहेंगे। ये हल और रणनीतियाँ जिंदगी को बेहतर बनाने में निर्णायक साबित होते हैं।

साम, दाम, दंड, भेद

एक बार एक व्यक्ति ने आचार्य चाणक्य से पूछा, "आचार्य, सफल होने की इच्छा सबमें होती है, लेकिन ऐसा क्यों है कि केवल कुछ ही लोग सफल होते हैं और अन्य असफल।"

चाणक्य बोले, "ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि लोगों के अंदर रणनीतियाँ बनाकर चलने की आदत नहीं होती। इसलिए वे अपने सामने आई समस्याओं को पहाड़-सा मानकर हथियार डाल देते हैं और इस तरह स्वयं पराजय को आमंत्रित कर लेते हैं।"

वह व्यक्ति बोला, "मैं कुछ समझा नहीं। कैसी रणनीतियाँ, कौन सी रणनीतियाँ हैं, जो समस्याओं के आने पर आजमानी चाहिए। कृपया विस्तार से बताएँ।"

चाणक्य बोले, "मेरा मानना है कि समस्याओं से निपटने के लिए साम, दाम, दंड और भेद की रणनीतियों को प्रयोग में लाना चाहिए। जो व्यक्ति बुद्धि के साथ ऐसा करते हैं, उनके लिए समस्याएँ सदैव अवसर का ही रूप लेकर आती हैं।"

यह सुनकर व्यक्ति बोला, "आचार्य, कृपया स्पष्ट रूप से समझाइए न कि कैसी रणनीतियाँ और किस प्रकार से आजमानी चाहिए?"

आचार्य चाणक्य बोले, "मैं यह कह रहा हूँ कि समस्याओं से निपटने के चार उपाय होते हैं। इन चारों उपायों को स्थिति एवं अवसर के अनुसार प्रयुक्त करना चाहिए। कई बार सबकुछ इतना सरल होता है कि आपसी चर्चा से सब सुलझ जाता है। किसी पर आक्रमण करने की कोई आवश्यकता नहीं होती। समझदार इनसान तर्क के द्वारा ही सब समझ जाता है। यही साम है।"

व्यक्ति बोला, "अच्छा, इसका मतलब यह हुआ कि समस्या आने पर तर्क-वितर्क के माध्यम से उसे आपसी समझ के अनुसार सुलझा लेना चाहिए।"

"हाँ।" चाणक्य बोले। फिर वे कुछ विचारते हुए बोले, "कई बार कुछ मनुष्य स्वार्थ लोलुप से भरे हुए होते हैं। ऐसे में वे सदैव अपना लाभ ढूँढ़ते हैं। समस्या का हल यदि ऐसे व्यक्ति से होते हुए जाता है तो उसे दाम देकर अपना मार्ग साफ कर लेना चाहिए।"

यह सुनकर व्यक्ति बोला, "यदि व्यक्ति साम और दाम की भाषा न समझे तो फिर समस्या को किस तरह दूर किया जाए?"

"फिर 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनानी चाहिए, शत्रुओं के बीच आंतरिक संघर्ष उत्पन्न कर देना चाहिए। यही भेद है।"

"यदि साम, दाम और भेद की रणनीतियाँ असफल हो जाएँ तो फिर क्या करना चाहिए?"

"ऐसी दृष्टि में केवल एक ही रणनीति बचती है—दंड की। ऐसी स्थिति में शत्रु को कठोर दंड देना चाहिए। दंड समय व परिस्थितियों के अनुरूप हो सकता है।"

"आचार्य, अगर दंड की भी रणनीति अनुकूल न हो तो फिर क्या करना चाहिए?"

अब चाणक्य थोड़ा उग्र होकर बोले, "साम, दाम, दंड और भेद की रणनीतियाँ हर समस्या पर विजय दिला सकती हैं। इन रणनीतियों का प्रयोग भी आवश्यकता पड़ने पर और लोकहित में ही करना चाहिए। व्यक्तिगत समस्याओं के लिए मस्तिष्क को शांत रखना चाहिए। शांत मस्तिष्क और धैर्य कुछ ही समय में इस बात को सत्य साबित कर देता है कि व्यक्तिगत समस्याएँ बहुधा महान् अवसर की प्रेरक होती हैं। यदि मैंने बचपन में समस्याओं को अवसर नहीं समझा होता तो कदापि आज इस स्थान पर नहीं होता, जहाँ पर हूँ।"

व्यक्ति अब आचार्य से पूर्णत: सहमत हो गया था कि हर समस्या पर कुशल बुद्धि विजय प्राप्त कर सकती है।

साम, दाम, दंड, भेद ही कैसे समस्याओं को दूर करते हैं?

साम—जीवन में कोई भी व्यक्ति कभी भी ठोकर खाकर गिर सकता है। मान लेते हैं कि ठोकर खाना नियति के हाथ में है, लेकिन ठोकर खाकर उठना पूर्णत: मनुष्य के हाथ में है। मनुष्य कभी भी सर्वगुण संपन्न नहीं होता। उसमें छोटी-मोटी कमियाँ होती ही हैं और ये इसलिए होती हैं, क्योंकि इनका होना ही मनुष्य को पूर्ण बनाता है। यदि कमियाँ न हों तो मनुष्य देव श्रेणी में आ जाता है और जहाँ देव आ जाते हैं, वहाँ मनुष्य का अस्तित्व मिटना प्रारंभ हो जाता है। मनुष्य जीवन चलता रहे, इसलिए यह अनिवार्य है कि गलतियाँ, कमियाँ और समस्याएँ हों, उन्हें होना ही है। कई बार जीवन में कुछ समस्याएँ ऐसी आ जाती हैं कि उन्हें मनुष्य नियंत्रित नहीं कर पाता, लेकिन अधिकतर समस्याएँ मनुष्यों के गलत चुनाव और निर्णय के कारण भी उत्पन्न होती हैं। जब गलत निर्णयों के कारण समस्याएँ आ जाएँ तो व्यक्ति को यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि वे समस्या का हिस्सा हैं और इनका समाधान भी उसी से होकर गुजरता है। जिम्मेदारी के साथ बुद्धिमत्ता से समस्या का सामना करके उसे हल करना ही साम है। कुशलता और समझदारी से सहयोग के साथ हर समस्या अवसर का रूप ले सकती है। इसलिए समस्या आने पर घबराएँ नहीं, बल्कि धैर्यपूर्वक उसका साहस के साथ सामना करें।

दाम—चाणक्य कहते हैं कि विपदा में धन ही मनुष्य का सच्चा हितैषी होता है। इसलिए धन को जोड़कर रखना चाहिए, ताकि विपदा आने पर उसका प्रयोग करके समस्या को दूर किया जा सके। कई बार धन का अभाव ही व्यक्ति को विपत्ति में अकेला रहने के लिए विवश करता है। इसलिए व्यक्ति को धनार्जन अच्छे और सही स्रोत से ही करना चाहिए। व्यक्ति को अपने और परिवार का व्यय सोच-समझकर और बजट बनाकर करना चाहिए, ताकि समस्या के समय दाम के द्वारा समस्या को सुलझाया जा सके। कई बार स्वास्थ्य, घर और परिवार की ओर से भी अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। बीमारी और आपदा से उत्पन्न समस्याओं को दूर करने में दाम की आवश्यकता ही अधिक होती है। चाणक्य इसको दूसरे संदर्भ में भी रखते हैं और कहते हैं कि कई बार लालची प्रवृत्ति के व्यक्ति शत्रु पक्ष के गुप्त रहस्य दाम के लालच में बता देते हैं। यदि देशहित में गुप्त रहस्यों को जानने के लिए व्यक्ति को दाम देना पड़े तो दे देना चाहिए, क्योंकि मात्र दाम देकर बड़ी समस्या को हल किया जा सकता है और विशेष रूप से देश को सुरक्षित रखा जा सकता है।

भेद—वर्तमान समय में अकसर लोग स्वांत: सुखाय में अधिक विश्वास करते हैं, इसलिए वे समस्या उत्पन्न होने पर लोगों में फूट डालने से भी नहीं चूकते। चाणक्य ने 'फूट डालो और राज करो' को भेद में गिना है, लेकिन इसको वे तभी उपयोग करने के लिए कहते हैं, जब लोकहित और देशहित के लिए ऐसा करना पड़े। व्यक्ति केवल अपने हित के लिए दूसरों का अहित करे, ऐसा चाणक्य कदापि नहीं कहते। चाणक्य ने सदैव देशहित देखा। एक अच्छे देश का निर्माण करने के लिए ही उन्होंने अपना सर्वस्व देशहित पर समर्पित कर दिया।

दंड—दंड इसलिए अनिवार्य होता है, क्योंकि इसके अभाव में 'मत्स्य कानून' पनपने लगता है, अर्थात् बड़ी मछली, छोटी मछली को निगलने लगती है। किसी भी देश में ऐसा होना अनैतिक और अनुचित है, इसलिए चाणक्य ने दंड पर बल दिया है। कई बार अपराधी चेतावनी देने पर भी भयंकर अपराध करने नहीं छोड़ता, ऐसे में दंड और वह भी कड़ा दंड देना उचित है। दंड से विपत्तियाँ और समस्याएँ टलती हैं और सुरक्षा एवं कल्याण की स्थापना होती है।

समस्याओं का अंत

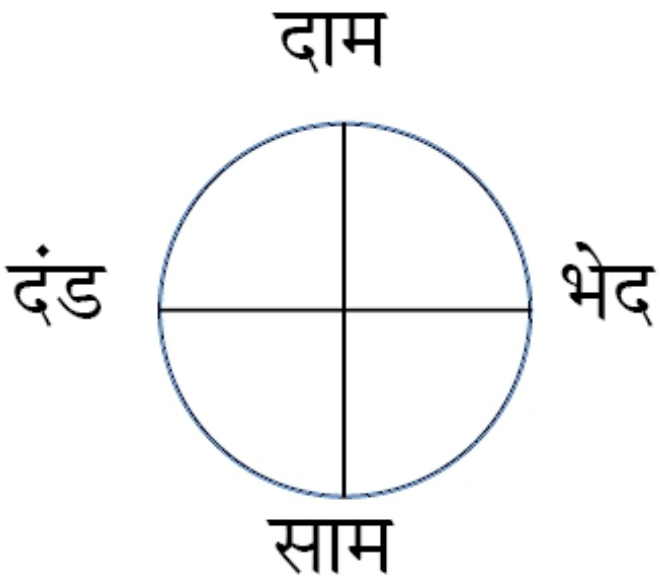

समस्याओं का निपटारा

चाणक्य कहते हैं कि जब समस्याएँ सामने आ खड़ी हों तो उनसे बचने के बजाय उनका डटकर सामना करें। यदि समस्याओं से बचने के लिए स्वयं को इधर-उधर कर लिया जाता है तो वे अत्यधिक विकराल रूप में सामने आ जाती हैं। जब समस्याएँ सामने आएँ तो तुरंत उन्हें सुलझाने का प्रयास करें। ऐसे में समस्याएँ अवसरों का रूप ले लेती हैं और व्यक्ति को लाभ ही पहुँचाती हैं। प्रत्येक कार्य की जिम्मेदारी स्वयं लेनी चाहिए। जो अपनी गलती की जिम्मेदारी स्वयं लेने की बजाय उसे दूसरों पर डालते हैं, उन्हें ही वास्तविकता में समस्याओं से जूझना पड़ता है। हिम्मत से अपनी गलती और जिम्मेदारी को स्वीकार करके अनेक समस्याओं का निपटारा सहजता से किया जा सकता है।

चाणक्य शिक्षा

चाणक्य कहते हैं कि समस्याओं को चतुराई से सुलझाना चाहिए। इसके लिए साम, दाम, दंड और भेद रणनीति का प्रयोग करना चाहिए। जो व्यक्ति सही रणनीति के साथ समस्याओं को सुलझाते हैं, वे सफलता प्राप्त करते हैं। समस्याओं से कभी भी घबराना नहीं चाहिए। उनका धैर्यपूर्वक और डटकर मुकाबला करना चाहिए। मुश्किल समस्याओं से बचने का प्रयास न करें। जो लोग समस्याओं से बचते हैं, उनके पास समस्याएँ अधिक विकराल रूप में उस समय आ खड़ी होती हैं, जब वे थकान से चूर होते हैं और विश्राम की तलाश में किसी उचित स्थान को ढूँढ़ रहे होते हैं।

❑❑❑